नालंदा
युनिवर्सिटी

वार्षिक रिपोर्ट

नालंदा विश्वविद्यालय

2010-2011 & 2011-2012

NU hindi annual report.indd w1 29-Apr-14 2:52:27 PM

नई दिल्ली कार्यालय
द्वितीय तल, काउंसिल फॉर सोशल डेवेलोपमेंट भवन
संघरचना, 53 लोधी स्टेट नई दिल्ली – 110003
दूरभाष संख्याः +91– 24618352 फैक्स संख्याः +91– 1124618351
राजगीर कार्यालय
राजगीर, जिला नालंदा – 803115
बिहार, भारत
वेबसाइट – **www.nalandauniv.edu.in**

NU hindi annual report.indd w2 29-Apr-14 2:52:27 PM

वार्षिक रिपोर्ट

2010 – 2011

एवं

2011 – 2012

विषय–सूची

प्रस्तावना	1
नालंदा विश्वविद्यालयः अतीत और वर्तमान	2
प्रबंधन मंडल	10
दृष्टि वक्तव्य	13
हमारे प्रतीक चिन्ह व पहचान	15
अध्यक्ष का संदेश	17
उपकुलपति की रिपोर्ट	22
शैक्षिक योजना	39
वित्तीय प्रबंधन	45
परिसर	47
अधिकारी व कर्मचारी निर्देशिका	50

NU hindi annual report.indd w3 29-Apr-14 2:52:28 PM

प्रस्तावना

हमें नालंदा विश्वविद्यालय की प्रथम वार्षिक रिपोर्ट पेश करते हुए प्रसन्नता हो रही है। इस रिपोर्ट में नवम्बर 2010 से मार्च 2012 की अवधि, यानि कि वित्तीय वर्ष 2010–2011 के एक भाग और पूर्ण वित्तीय वर्ष 2011–2012 को शामिल किया गया है।

रिपोर्ट एक दृष्टि वक्तव्य प्रदान करने के साथ–साथ विस्तार से नालंदा विश्वविद्यालय में विकास के घटनाक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इसके अलावा, यह प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की एक संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी प्रदान करती है और नवंबर 2010 में एक आधुनिक विश्वविद्यालय के रूप में उसके पुनरुद्धार को भी दर्शाती है।

वार्षिक रिपोर्ट में अध्यक्ष का संदेश और उपकुलपति, विशेष ड्यूटी पर अधिकारी (विश्वविद्यालय विकास और शैक्षणिक मामले) और विशेष ड्यूटी पर अधिकारी (वित्त) की विश्वविद्यालय के विकास के विभिन्न आयामों पर रिपोर्ट शामिल है।

NU hindi annual report.indd x1 29-Apr-14 2:52:28 PM

नालंदा विश्वविद्यालयः अतीत और वर्तमान

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

नालंदा क्षेत्र वहाँ स्थित है जहां एक समय पर मगध का तत्कालीन साम्राज्य था। इसकी राजधानी राजगृह, आधुनिक काल में राजगीर है, जो नये नालंदा विश्वविद्यालय का स्थल है। विश्व में शिक्षण के प्राचीनतम ज्ञात केंद्र, पुराने नालंदा ने अपने उद्भव के बाद 5 वीं शताब्दी ईस्वी से लगभग 12 वीं सदी ईस्वी तक निर्बाध रूप से इस विशिष्ट स्थिति का आनंद उठाया।

प्रारंभ में बौद्ध शिक्षा, दर्शनशास्त्र, रसायनशास्त्र, शरीर–रचना विज्ञान और गणित के एक केंद्र के रूप में स्थापित किये गये इस आवासीय विश्वविद्यालय ने मध्य और पूर्वी एशिया के विभिन्न भागों जैसे चीन, कोरिया, तिब्बत, मंगोलिया और टर्की के कई प्रसिद्ध विद्वानों और छात्रों को आकर्षित किया। ह्वेन्सांग और यिजिंग नालंदा विश्वविद्यालय में पधारने वाले कुछ प्रतिष्ठित विद्वान थे। नालंदा का समग्र शिक्षण प्रतिरूप, जो जीवंत वाद विवाद व संवाद पर आधारित था, ने व्यक्तिगत, मानव जीवन और वृहत जीवमंडल के बीच एक संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया। इसने विभिन्न प्रकार के ज्ञान को भी आत्मसात किया। विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु एक कठिन प्रवेश परीक्षा होती थी। अपने चरम पर, नालंदा विश्वविद्यालय ने 10,000 छात्रों तथा 2000 शिक्षकों को समायोजित किया था।

इस व्यापक ज्ञान के आधार पर प्राचीन विश्वविद्यालय के तीन भवन पुस्तकालय हेतु पूर्णतः समर्पित थे। यह पुस्तकालय, जो धर्म गूँज के रूप में जाना जाता था, अपने समय में विश्व में बौद्ध और हिंदू साहित्य का सबसे बड़ा संग्रह था। अपनी शैक्षिक उत्कृष्टता के अतिरिक्त, नालंदा विश्वविद्यालय शिल्पकला का एक अदभुत उदहारण था, जोकि उस स्थल की पुरातात्विक खुदाई से स्पष्ट हुआ। भीतरी भाग

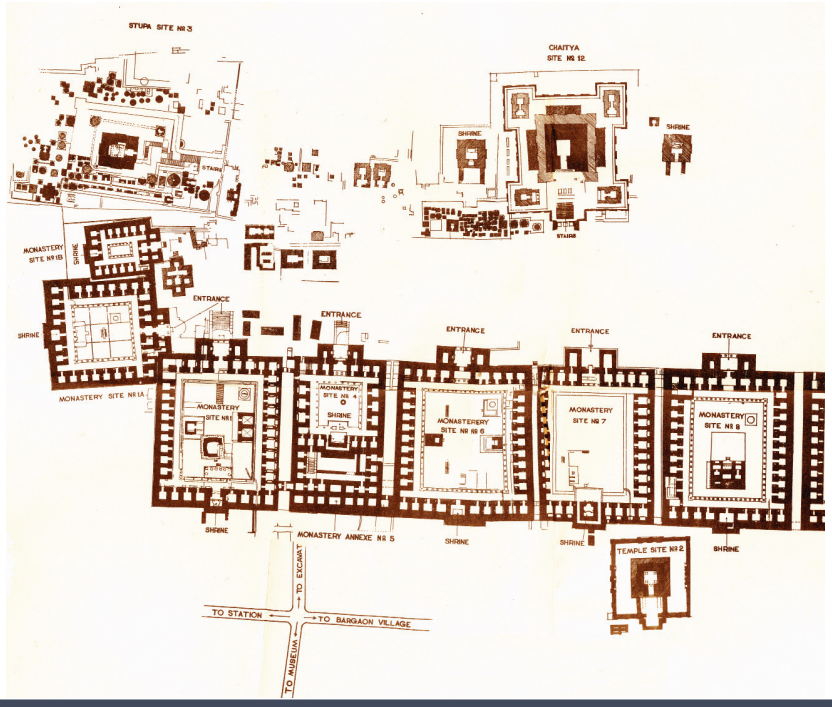

खुदाई द्वारा प्राप्त नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेषों के ढांचे।

NU hindi annual report.indd x2 29-Apr-14 2:52:28 PM

में रोधन हेतु मोटी लाल ईंटों के प्रयोग से यह ज्ञात होता है कि स्थानीय जलवायु परिस्थितियों को ध्यान में रखकर निर्माण किया गया था। व्यापक निकासी प्रणाली का निर्माण यांत्रिकी विशेषज्ञता के साथ किया गया था। महीन चूने से निर्मित सुंदर और अलंकृत मूर्तियां उत्तम कृतियाँ हैं जिनकी नकल आज भी असंभव है।

नालंदा की उत्तरजीविता मुख्य रूप से राजकीय संरक्षण व आसपास के गाँवों से दान के रूप में मिले उत्पाद और राजस्व के माध्यम से चलती थी, जिससे विद्वानों को अपने जीवनयापन के विषय में चिंतित नहीं होना पड़ता था।

12वीं सदी में नालंदा का पतन, उच्च शिक्षा की सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाली संस्था के अंत के रूप में चिह्नित है, जोकि वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय था और अपने समय में ज्ञान उत्पत्ति और प्रसार में शीर्ष और अद्वितीय स्थान रखता था।

खुदाई द्वारा प्राप्त नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेषों के ढांचे।

NU hindi annual report.indd x3 29-Apr-14 2:52:29 PM

आधुनिक विश्वविद्यालय में परिवर्तन

नालंदा का शाब्दिक अर्थ 'देने का कोई अर्थ नहीं' है। यह विचार ज्ञान के इस प्राचीन स्थान के पुनरुद्धार को रेखांकित करता है और पुनः इसे एक शीर्ष शैक्षिक संस्था बनाने की अभिलाषा की ओर प्रेरित करता है, जो भारत को पुनः उसके सर्वोत्तम स्थान में, नई ज्ञान क्रांति की अग्रणी अवस्था प्राप्त करने में सहायता करेगा।

मार्च 2006 में, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने बिहार विधानमंडल को संबोधित करते हुए इस विचार को व्यक्त किया। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार की आवश्यकता पर बल देते हुए इसे एक बार फिर विचारों के आदान–प्रदान का केंद्र बनाने की वकालत की। इस लक्ष्य को पूरे विश्व से अनुसंधान के लिए विद्वानों को आकर्षित करके दर्शन को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अर्थशास्त्र और अध्यात्मवाद से जोड़ने तथा प्राचीन और आधुनिक विचारों को समाहित करके पूरा किया जाना था।

बिहार सरकार, जो स्वयं ही नालंदा विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित करने की एक योजना पर विचार कर रही थी, ने एक बार फिर से नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना के विचार का समर्थन किया।

2006 के मध्य में, सिंगापुर की सरकार का एक सुझाव प्राप्त हुआ, जिसका शीर्षक था ''नालंदा प्रस्ताव।'' इस प्रस्ताव में पर्यटकों द्वारा प्रयोग किये जाने वाले आधारभूत ढांचे को उन्नत बनाने पर भारत में बौद्ध सर्किट की अपार संभावनाओं को रेखांकित किया गया था। इस प्रस्ताव ने यह भी सुझाव दिया कि 21 वीं सदी में ज्ञान उपार्जन हेतु नालंदा एक आदर्श स्थान होगा जो दक्षिण और पूर्वी एशिया को जोड़ेगा। एक अतिरिक्त सुझाव यह भी था कि यदि पूरे क्षेत्र में ढांचागत सुधार किया जाए जोकि नालंदा विश्वविद्यालय के आसपास पर्यटन को बढ़ावा दे, तो इसके बदले में पूरे क्षेत्र का आर्थिक विकास सक्षम होगा।

चतुर्थ दक्षिणी एशियाई शिखर सम्मलेन के दौरान प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह।

NU hindi annual report.indd x4 29-Apr-14 2:52:30 PM

नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार का प्रस्ताव पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) के सोलह राज्य सदस्यों के समर्थन द्वारा किये जाने का था। जनवरी 2007 में ईएएस के सेबू शिखर सम्मलेन में, सदस्य राज्यों ने नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार की क्षेत्रीय पहल का स्वागत किया।

इसी बीच बिहार विधानमंडल ने सर्वसम्मति से विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु नालंदा विश्वविद्यालय विधेयक 2007 को मार्च 2007 में पारित कर दिया। इसके अतिरिक्त, बिहार सरकार ने प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहरों से 10 किलोमीटर दूर राजगीर में लगभग 500 एकड़ भूमि को चिन्हित करके इस दिशा में ठोस कदम उठाये।

सेबू में हुई शिखर वार्ता की प्रतिक्रिया के आधार पर बिहार सरकार ने केंद्र सरकार को भी नालंदा परियोजना में सम्मिलित करने का निर्णय लिया क्योंकि वह नए विश्वविद्यालय को सही अर्थों में विश्वस्तरीय बनाना चाहती थी।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सहभागिता के ढांचे को समझने और विश्वविद्यालय संस्थान को चलाने के लिए, विदेश मंत्रालय ने प्रोफेसर अमर्त्य सेन की अध्यक्षता में नालंदा परामर्शदाता समूह (एनएमजी) का गठन किया। इसमें निम्नलिखित सदस्य थेः

1 प्रोफेसर अमर्त्य सेन, अध्यक्ष, हार्वर्ड विश्वविद्यालय

2 श्री जॉर्ज यो, सिंगापुर के विदेश मंत्री

3 श्री एन.के.सिंह, सांसद (राज्यसभा)

4 प्रोफेसर लार्ड मेघनाद देसाई, सदस्य, उच्च सदन, यूके

5 श्री ईकुओ हिरायामा, (जापान)

6 प्रोफेसर सुगाता बोस, हार्वर्ड विश्वविद्यालय

7 प्रोफेसर वांग बंग्वई, पीकिंग विश्वविद्यालय

8 डॉ. तानसेन सेन, न्यूयॉर्क सिटी विश्वविद्यालय

9 श्री एन. रवि (सदस्य–सचिव) सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय

NU hindi annual report.indd x5 29-Apr-14 2:52:31 PM

बाद के वर्षों में निम्न सदस्य विधिवत रूप से इस दल से जुड़ेः

1 प्रोफेसर वांग गुंगवू, पूर्वी एशिया संस्थान, सिंगापुर विश्वविद्यालय, जो कि गठन से ही अंशकालिक सदस्य थे, पूर्णकालिक सदस्य बन गए।

2 प्रोफेसर सुसुमू नाकानिशी, कोशी साहित्य संग्रहालय, टोयोमा प्रान्त, जापान – श्री ईकुओ हिरायामा की मृत्यु के पश्चात् शामिल हुए।

3 प्रोफेसर प्रापोद अस्सवाविरुल्हाकर्ण, चुलालोंगकॉर्न विश्वविद्यालय, बैंकाक – एक नए सदस्य के रूप में इस दल में शामिल हुए

4 श्री एन. रवि के पश्चात् सुश्री लता रेड्डी और उनके बाद श्री संजय सिंह सदस्य–सचिव के रूप में शामिल हुए।

इस दल को विश्वविद्यालय की शासन संरचना के स्वरूप व कोष इकठ्ठा करने के संसाधनों के विषय में प्रस्ताव देने का भी कार्य सौंपा गया।

नालंदा परामर्शदाता समूह की बैठक छह बार हुईः

सिंगापुर (जुलाई 2007)

टोक्यो (दिसम्बर 2007)

न्यू यॉर्क (मई 2008)

नई दिल्ली (अगस्त 2008)

नालंदा – गया (फरवरी 2009) और

नई दिल्ली (अगस्त 2010)।

सिंगापुर में आयोजित नालंदा मार्ग प्रदर्शनी।

NU hindi annual report.indd x6 29-Apr-14 2:52:31 PM

इस दल ने यह परिकल्पना की है कि नालंदा विश्वविद्यालय को एक उत्कृष्ट शोध व अध्यापन का केंद्र बनाने के लिए स्नातकोत्तर अध्ययन पर और जोर देने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसे इतिहास से सीख लेते हुए भविष्य में अपनी प्रासंगिकता पर बल देना होगा। स्थानीय प्रतिबद्धता को बनाए रखते हुए इसकी दृष्टि एक वैश्विक दर्शन पर आधारित होगी। यह एक सार्वजनिक संस्थान होगा जोकि गैर–सरकारी संगठनों और निजी संस्थानों का भी सहयोग और भागीदारी लेगा। उन्होंने दोहराया है कि नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा प्राप्ति का एक अद्वितीय संस्थान होना चाहिए। यह शैक्षिक रूप में स्वायत्त होगा और शिक्षा के उच्च स्तरों को प्रोत्साहित करेगा और शैक्षिक उत्कृष्ठता को बढ़ावा देगा। इस दल ने बिहार सरकार की भावनाओं को प्रतिध्वनित करते हुए जोर दिया कि नये नालंदा को विश्व में सर्वोत्तम विश्वविद्यालयों में से एक के रूप में विकसित होना चाहिए, जहां उच्च क्षमता के छात्र व विद्वान विकास व शोध की उच्च अवस्था को प्राप्त कर सकें।

नालंदा परामर्शदाता दल इस बात से सहमत था कि स्थानीय लोगों और स्थानीय समुदायों को नालंदा विश्वविद्यालय से लाभ होना चाहिए तथा इसमें उनकी सहभागिता होनी चाहिए। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए विदेशी सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और निजी स्रोतों से मिलने वाले अंतर्राष्ट्रीय अनुदान का स्वागत किया।

नालंदा परामर्शदाता समूह की सिंगापुर में प्रारंभिक बैठक।

श्री नितीश कुमार व श्री एस.एम.कृष्णा के साथ नालंदा परामर्शदाता दल की अंतिम बैठक।

NU hindi annual report.indd x7 29-Apr-14 2:52:31 PM

इस बात पर सहमति हुई कि विश्वविद्यालय की वास्तु योजना पर्यावरण के अनुकूल होनी चाहिए और इस क्षेत्र के प्राकृतिक वातावरण को विश्वविद्यालय के रूप और संरचना में समाहित किया जाना चाहिए, पर ऐसा समकालीन स्वरुप और शांत परिस्थिति में किया जाना चाहिए। इस दल ने अन्य देशों में प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थाओं के साथ जुड़ने के विचार का समर्थन किया। समूह ने दोहराया है कि नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार की धारणा मात्र बौद्ध धर्म का अध्ययन करना नहीं, अपितु समकालीन शिक्षा जैसे दर्शनशास्त्र, इतिहास, व्यापार और प्रबंधन, पारिस्थितिकी व पर्यावरण तथा सूचना प्रौद्योगिकी का भी अध्ययन करना है।

एनएमजी ने यह सुझाव दिया है कि विश्वविद्यालय के प्रारंभिक वर्षों में कार्य शोध विद्वानों और स्नातकोत्तर छात्रों से शुरू करना चाहिए। स्थायित्व के एक निश्चित स्तर की प्राप्ति के पश्चात्, स्नातक स्तर पर प्रवेश के विषय में विचार किया जा सकता है।

यह भी निर्णय लिया गया कि शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक कर्मचारियों के लिए वेतनमान की संरचना अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ तुलनीय होगी। इसके साथ ही, प्रस्तावित विश्वविद्यालय के छात्रों से प्राप्त होने वाली फीस को भी वैश्विक स्वरुप देना होगा जिसमें मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति और/या अन्य प्रकार की सहायता दी जा सके।

भारत में हुई एनएमजी की बैठकों में बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार और भारत के पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम सम्मिलित हुए। मुख्य मंत्री ने बिहार सरकार की ओर से इस परियोजना को पूरा समर्थन दिया। श्री नीतीश कुमार ने यह विचार रखा कि विश्वविद्यालय को अपने आस–पास के परिवेश के साथ संबद्ध होना चाहिए और पड़ोसी गांवों के समुदायों को लाभ देना चाहिए और साथ ही प्राचीन नालंदा पर अनुसंधान कार्य करना चाहिए।

एनएमजी की अगस्त 2010 में हुई अंतिम बैठक के समय तक नालंदा विश्वविद्यालय विधेयक (2010) संसद के सामने रखे जाने के लिए तैयार था। 12 अगस्त 2010 को नालंदा विश्वविद्यालय विधेयक को संसद के ऊपरी सदन, राज्य सभा में पेश किया गया और सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। इसे संसद के निचले सदन, लोकसभा में भी 26 अगस्त को सर्वसम्मति से पारित किया गया। 21 सितम्बर, 2010 को इसे राष्ट्रपति की भी स्वीकृति मिल गयी और नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 को अगले ही दिन भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया गया। एक सरकारी विज्ञप्ति के पश्चात् यह विधेयक 25 नवंबर 2010 को लागू हो गया। इसलिए, 25 नवंबर, 2010 को विश्वविद्यालय का संस्थापना दिवस है।

NU hindi annual report.indd x8 29-Apr-14 2:52:31 PM

नालंदा परामर्शदाता दल इस तिथि से एक वर्ष की अवधि के लिए प्रबंधन मंडल बन गया। इससे जब विश्वविद्यालय प्रशासन व नालंदा परामर्शदाता दल अपनी सोच के अनुसार विश्वविद्यालय को स्थापित करने का कार्य कर रहे हैं तो उनमें निरंतरता बनी रहती है।

नालंदा विश्वविद्यालय के प्रस्तावित स्थल पर प्रबंधन मंडल के सदस्य।

NU hindi annual report.indd x9 29-Apr-14 2:52:31 PM

प्रबंधन मंडल

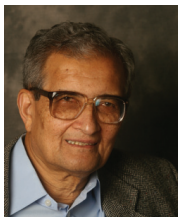

प्रोफेसर अमर्त्य सेन लामोंट विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र व दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर हैं। इससे पहले वह ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज के मास्टर थे। उनके वृहद् शोध में अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र और निर्णय सिद्धांत, समाज चुनाव सिद्धांत, कल्याणकारी अर्थशास्त्र, माप का सिद्धांत, विकास अर्थशास्त्र, सामाजिक स्वास्थ्य, लिंग अध्ययन, नैतिक और राजनैतिक दर्शनशास्त्र तथा शांति व युद्ध का अर्थशास्त्र शामिल है। उन्हें भारत–रत्न (भारत के राष्ट्रपति द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान) और अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। प्रोफेसर सेन नालंदा विश्वविद्यालय की प्रबंधन मंडल के अध्यक्ष हैं।

जॉर्ज यिओ नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल की अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति के अध्यक्ष हैं। वे वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम के संस्थापक परिषद्, निकोलस बेरग्रुएन संस्थान के 21 वीं सेंचुरी परिषद् और हार्वर्ड बिजनेस स्कूल की अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति और आईईएसई बिजनेस स्कूल के सदस्य हैं। उन्होंने सिंगापुर सरकार में 23 वर्षों तक संचार और कला मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, व्यापार व उद्योग मंत्री तथा विदेश मंत्री के रूप में कार्य किया है।

एन. के. सिंह वर्तमान में बिहार से राज्यसभा (भारत की संसद का ऊपरी सदन) के सदस्य हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री के सचिव के रूप में कार्य किया है और वे राष्ट्रीय योजना आयोग के सदस्य व बिहार राज्य योजना परिषद् के उपाध्यक्ष भी रहे हैं। इन्होंने बड़ी संख्या में किताबें और लेख लिखे हैं जिनमें सुधारवादी राजनीतिक अर्थव्यवस्था का पैना विश्लेषण और गठबंधन की राजनीति की वास्तविकताओं का उल्लेख है।

प्रोफेसर लॉर्ड मेघनाद देसाई लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ़ ग्लोबल गवर्नेंस, जिसकी स्थापना उन्होंने 1992 में की थी, के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर हैं। अप्रैल 1991 में उन्हें वेस्टमिंस्टर शहर के सेंट क्लेमेंट डेन्स का आजीवन बैरन देसाई बनाया गया। 1990 में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में स्थापित डेवलपमेंटल स्टडीज इंस्टिट्यूट (डेस्टिन) के वे एक संस्थापक सदस्य भी थे। उन्होंने अर्थमिति, समष्टि अर्थशास्त्र, मार्क्सियन अर्थशास्त्र और विकास अर्थशास्त्र पढ़ाया है।

NU hindi annual report.indd x10 29-Apr-14 2:52:31 PM

प्रोफेसर प्रपोद अस्सवाविरुल्हाकर्ण, चुलालॉन्गकोर्न विश्वविद्यालय, बैंकॉक में कला संकाय के अध्यक्ष हैं। वह चुलालॉन्गकोर्न विश्वविद्यालय के पूर्वी भाषाओं के विभाग के प्रमुख भी थे। उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय बर्कले से बौद्ध शिक्षा में अपना डॉक्टरेट प्राप्त किया है।

प्रोफेसर वांग गुंगवू इंस्टिट्यूट ऑफ साउथईस्ट एशियन स्टडीज के अध्यक्ष तथा नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर (एनयूएस) के यूनिवर्सिटी प्रोफेसर हैं। वे ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर भी हैं। वे एनयूएस के ली कुआँ येऊ स्कूल ऑफ़ पब्लिक पालिसी के अध्यक्ष हैं। वे हांगकांग विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे (1986–1998)। प्रोफेसर वांग कमांडर ऑफ़ ब्रिटिश एम्पायर (सीबीई) भी हैं।

वर्तमान में नारा प्रान्त काम्प्लेक्स के अध्यक्ष, प्रोफेसर सुसुमु नाकानिशि, इंटरनेशनल रिसर्च फॉर जापानी स्टडीज में एक मानद प्रोफेसर हैं। सुसुमु नाकानिशि की शोध रूचि जापानी संस्कृति के साहित्यिक अध्ययन समीक्षा, प्राचीन साहित्य के तुलनात्मक शोध जैसे मान्यो शू के काव्य संकलन के अनुसंधान पर केन्द्रित है।

प्रोफेसर सुगाता बोस हार्वर्ड विश्वविद्यालय में इतिहास के गार्डिनर प्रोफेसर हैं। उनकी विद्वत्ता ने उपनिवेशवादी और उत्तर उपनिवेशवादी राजनीतिक अर्थव्यवस्था, ग्रामीण और शहरी कार्यक्षेत्र में संबंध, हिंद महासागर के पार यात्रा, व्यापार और कल्पना की अंतर–क्षेत्रीय रंगभूमि के बीच संबंध और भारतीय नैतिक प्रवचन, राजनीतिक दर्शन और आर्थिक सोच पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने टैगोर के गीतों का अंग्रेजी में अनुवाद और उनकी रिकॉर्डिंग प्रकाशित की है। उन्हें 1997 में गुग्गेनहेइम अध्येतावृत्ति से भी पुरस्कृत किया गया था।

प्रोफेसर वांग बांगवेई वर्तमान में पीकिंग विश्वविद्यालय में ओरिएंटल स्टडीज संस्थान और ओरिएंटल साहित्य रिसर्च सेंटर के प्रोफेसर और निदेशक हैं। वे पीकिंग विश्वविद्यालय में भारत अनुसंधान केन्द्र के निदेशक भी हैं। उन्होंने चीनी बौद्ध तीर्थयात्राओं के इतिहास और चीनी भिक्षुओं ह्वेन त्सांग और यीजिंग की यात्राओं के विवरण और साथ ही चीन और भारत के बीच सांस्कृतिक आदान प्रदान के इतिहास पर शोध पत्र प्रकाशित किये हैं।

NU hindi annual report.indd x11 29-Apr-14 2:52:32 PM

तानसेन सेन बरूच कॉलेज, द सिटी विश्वविद्यालय, न्यू यॉर्क में एशियाई इतिहास और धर्म के एसोसिएट प्रोफेसर हैं। आजकल वह नालंदा–श्रीविजया सेंटर, दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान, सिंगापुर में वरिष्ठ शोधकर्ता हैं। वर्तमान में श्री सेन चौदहवीं और पंद्रहवीं सदी में एशिया में अंतर सांस्कृतिक व्यापार की खोज पर एक विशेष लेख, दक्षिणी सिल्क रोड पर एक सहयोगी परियोजना और भारत में चीनी समुदाय के अनुभवों और इतिहास के संग्रहण के लिए एक वेबसाइट के निर्माण पर कार्य कर रहे हैं।

संजय सिंह 1976 में भारतीय विदेश सेवा में शामिल हुए। उन्होंने मेक्सिको, जर्मनी, घाना और फ्रांस में भारतीय मिशन तथा विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली में विदेश मंत्री के कार्यालय में निदेशक के रूप में व संयुक्त/अतिरिक्त सचिव और लैटिन अमेरिकी देशों व खाड़ी देशों से संबंधित प्रभागों के प्रमुख और हज अध्यक्ष के रूप में सेवा की है। उन्होंने हो ची मिन्ह सिटी में भारत के कौंसुल जनरल और उसके पश्चात् मार्च 2009 से मार्च 2011 तक ईरान में भारत के राजदूत के रूप में कार्य किया। उन्होंने विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) के रूप में 18 मार्च 2011 को पदभार संभाला।

गोपा सभरवाल नालंदा विश्वविद्यालय की उपकुलपति हैं। वह भारत के एक अग्रणी कॉलेज, लेडी श्री राम कॉलेज फॉर वीमेन से नालंदा आईं जहां उन्होंने 1993 में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की थी। उनके व्यापक शोध में शहरी भारत में जातीय समूह, दृश्य नृविज्ञान और समाज के इतिहास पर जोर दिया गया है।

NU hindi annual report.indd x12 29-Apr-14 2:52:32 PM

दृष्टि वक्तव्य

जैसा कि नालंदा परामर्शदाता दल द्वारा अपनाया गया

नालंदा शब्द को सारे विश्व में सदियों से जाना जाता रहा है। इस विश्वविद्यालय ने न केवल एशिया, अपितु दूर–दूर से छात्रों और विद्वानों को आकर्षित किया। यह न केवल बौद्ध अध्ययन और दर्शन के वरन चिकित्सा और गणित के उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में भी जाना जाता था। हजारों छात्रों को सदियों तक पढ़ाने के पश्चात्, दूसरी सहस्राब्दी के आरम्भ में जब बोलोग्ना, पेरिस और ऑक्सफोर्ड में विश्वविद्यालय प्रारम्भ हो रहे थे, नालंदा का पतन हुआ। पूर्व से पश्चिम की ओर ज्ञान के केन्द्र का विस्थापन आधी सहस्राब्दि के भीतर सत्ता के संभावित हस्तांतरण का एक प्रतीक मात्र था।

नालंदा को पुनः सार्वभौमिक ज्ञान का केन्द्र बनाने का उचित अवसर अब आ गया है। दूसरी सहस्राब्दी, सदियों के रुकाव, विभाजन और पतन के बाद एशिया के एक अद्भुत पुनरुत्थान के साथ समाप्त हुई। आज एशिया का पर्याय है ऊर्जावान उद्यमिता और अभिनव संस्कृति, जो ज्ञान और उद्यमिता पर आधारित है और जो न अपने अतीत को भूलता है और न ही भविष्य का सामना करने से घबराता है। एशिया को शांति और सद्भाव का महाद्वीप बनाने के लिए एशियाई देश साथ आ रहे हैं। सेबू, फिलिपींस में आयोजित पूर्वी एशिया शिखर वार्ता 2007 की बैठक में नालंदा विश्वविद्यालय को पुनः स्थापित करने की योजना के निर्णय का समर्थन, इन मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता रेखांकित करता है।

तीसरी सहस्राब्दी को पहली सहस्राब्दी के नालंदा की उत्कृष्टता के समकक्ष लाना हमारे लिए एक चुनौती है। तीसरी सहस्राब्दी का विश्वविद्यालय अपने दृष्टिकोण में सार्वभौमिक हो, जो सारे विश्व के विचार और आचरण के प्रवाह के लिए खुला हो, तथा विश्व की आवश्यकताओं का प्रत्युत्तर देना सुनिश्चित कर सके, जिसे विश्व में सब लोगों के लिए आवश्यक शान्ति, समृद्धि तथा न्याय व आशा स्थापित करने से पहले अभी मीलों आगे चलना है ।

इस सबके ऊपर, नालंदा ज्ञान का सबसे उत्तम केन्द्र होना चाहिए। इसका प्राथमिक उद्देश्य नए ज्ञान के सृजन और प्रसार के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं के उपयोग के साथ–साथ अवांछित उपेक्षा का सामना कर रहे बहुमूल्य पुरातन अंतर्दृष्टि को पुनः प्राप्त कर उसकी पुनर्स्थापना और संरक्षण होना चाहिए।

NU hindi annual report.indd x13 29-Apr-14 2:52:33 PM

नालंदा को विश्व के उन सभी विद्यार्थियों के लिए खुला होना चाहिए जिन्हें विविध क्षेत्रों में ज्ञान अर्जित करने की लालसा और क्षमता है। ज्ञान के सृजन और पुनः सृजन के लिए उसमें पुनः सर्वश्रेष्ठ विद्वान और शोधकर्ता होने चाहिए, जैसे कि पहले भी थे। इसे एक जीवंत रहने वाले पर्यावरण को वहन करना होगा जो अगली पीढ़ी के पोषण– जो ज्ञान का केंद बनाने वालों की संतानों के लिए उपयुक्त होगा। इसे अपने परिवेश के अनुकूल होना होगा और अपने आस–पास के लोगों का जीवन समृद्ध करना होगा।

नालंदा नया होगा, लेकिन यदि अपने पुरातन स्वरुप से श्रेष्ठ न भी हो तो भी स्वयं को उसके समकक्ष लाने का प्रयत्न करेगा। इसका नाम पूरे विश्व में एक ऐसे स्थान के रूप में गुंजायमान होना चाहिए जहां लोग अपने ज्ञान कोष में बढ़ोत्तरी करने के लिए जाएँ और इससे दूर जाकर साथ–साथ दूर–दूर तक उसका प्रसार करें। इसे एशिया या वास्तव में विश्व के सर्वश्रेष्ठ संसाधनों को आकर्षित कर विश्व को बेहतर बनाने के लिए नई और बहुमूल्य अंतर्दृष्टि का निर्माण करना चाहिए।

Nālandā
UNIVERSITY

NU hindi annual report.indd x14 29-Apr-14 2:52:33 PM

विश्वविद्यालय के प्रतीक चिन्ह और पहचान

मेसर्स रे + केशवन द्वारा तैयार किया गये प्रतीक चिन्ह का अनावरण 15 नवम्बर, 2011 को चीनी राजदूत द्वारा एक मिलियन अमेरिकी डॉलर का योगदान सौंपने के अवसर पर किया गया था।

नालंदा का प्रतीक चिन्ह नालंदा के प्रमुख विचार को वैसे ही प्रस्तुत करता है जैसा कि "नालंदा पद्धति" में वर्णित है:

''मनुष्य के साथ सद्भाव से वास करता हुआ मनुष्य, प्रकृति के साथ सद्भाव से वास करता हुआ मनुष्य और प्रकृति के एक अंश के रूप में वास करता हुआ मनुष्य।

मनुष्य के साथ सद्भाव से वास करता हुआ मनुष्य, मानवता के अध्ययन के माध्यम से उन्नत होगा।

प्रकृति के साथ सद्भाव से वास करता हुआ मनुष्य, विज्ञान के अध्याय और उसे आगे बढ़ाने के महत्व को समझता है।

प्रकृति के एक अंश के रूप में वास करते हुए मनुष्य का रहन–सहन एक ऐसे समुदाय के निर्माण हेतु समझा जाता है, जो अपने स्थानीय परिवेश के साथ सद्भाव रखता है।''

एक रेखाचित्र के रूप में, यह प्रतीक चिन्ह एक पहेली या दृश्य यमक है। एक तरफ तो यह एक पेड़ दर्शाता है, जो प्रकृति का महत्वपूर्ण प्रतीक है, महत्वपूर्ण इसलिए क्योंकि बोधि वृक्ष का नालंदा की कहानी में महत्व है और महत्वपूर्ण है क्योंकि पेड़ जीवन और देने का द्योतक है। दूसरी ओर यह व्यक्तियों के गुंथे चित्र को दिखाता है जो इस नए विश्वविद्यालय को बनाने के लिए साथ आए हैं।

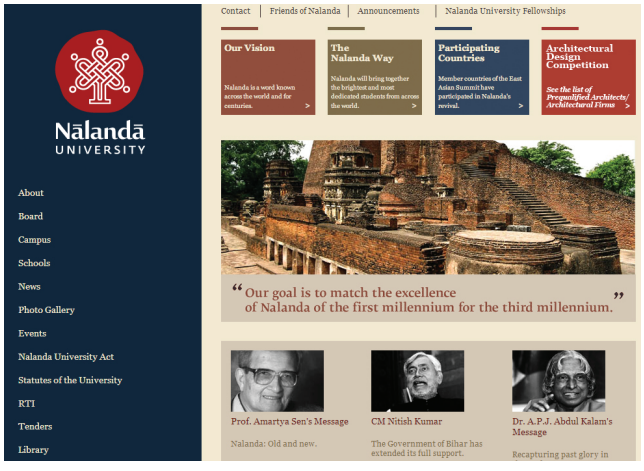

विश्वविद्यालय की संचार प्रौद्योगिकी की झलक।

NU hindi annual report.indd x15 29-Apr-14 2:52:33 PM

विभिन्न साझेदारों के आपस के जुड़ाव के चित्रण में यह प्रतीक चिन्ह इस बात का उदहारण देता है कि इस विश्वविद्यालय में क्या विशिष्ठ है – जहां विभिन्न देशों, और भूभागों से आए व्यक्ति एक नए संस्थान को बनाने के कार्य हेतु एकत्र हुए हैं। यह वैश्वीकरण के अलग आयामों पर जोर देता है: विचारों और लोगों का आदान–प्रदान जिससे शिक्षा और संस्कृति का विस्तार हो सके।

दृश्य का वर्णन अपनी अभिव्यक्ति में स्पष्ट रूप से एशियाई है, और यह अद्वितीय है कि वह किसी भी अन्य प्रतीक चिन्ह के समान नहीं है। विश्वविद्यालय के डीएनए से व्युत्पन्न, और पारंपरिक और कालातीत डिजाइन के सिद्धांतों का उपयोग कर तैयार किया गया प्रतीक चिन्ह ऐसी भाषा जैसा नहीं जो आज चलन में है तो कल नहीं, बल्कि यह प्रतीक चिन्ह टिके रहने की क्षमता रखता है।

मेसर्स रे + केशवन ने विश्वविद्यालय की वेबसाइट के विकास में भी सहायता की है जो कि मेसर्स वायरस द्वारा आयोजित की जा रही है। नई दिल्ली में विश्वविद्यालय के पहले सार्वजनिक समारोह के अवसर पर यह वेबसाइट www.nalandauniv.edu.in 7 अक्तूबर 2011 को एक खुले सत्र में जिसमें मुख्य वक्ता प्रोफेसर अमर्त्य सेन थे, यह वेबसाइट गतिशील (लाइव) की गयी।

Nālandā UNIVERSITY

Nālandā UNIVERSITY

Nālandā UNIVERSITY

विश्वविद्यालय के प्रतीक चिन्ह के विभिन्न संस्करण।

NU hindi annual report.indd x16 29-Apr-14 2:52:33 PM

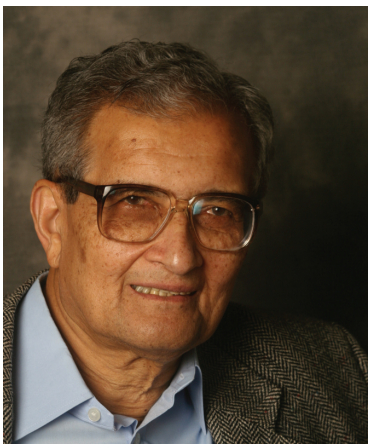

अध्यक्ष का संदेश

नालंदाः पुरातन और नवीन

जब यूरोप के सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय, बोलोग्ना विश्वविद्यालय की स्थापना हुई – जो 1088 में था, तब तक उच्च शिक्षा का केंद्र, नालंदा विश्वविद्यालय छह सौ साल से भी अधिक पुराना हो चुका था। पुरातन नालंदा विश्वविद्यालय – एक बौद्ध संस्थान – बिहार में पटना से लगभग 55 मील की दूरी पर दक्षिण पूर्वी दिशा में स्थित था। इसकी स्थापना पांचवीं व छठी सदी में हुई, उसके बाद इसका तेजी से विस्तार हुआ, और सात सौ साल से अधिक समय तक यह बहुत फला–फूला और फिर बारहवीं सदी के अंत तक आते–आते 1193 में एक हिंसक अफगान आक्रमण में इसका विध्वंस हो गया। नालंदा का विनाश ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रारंभ के शीघ्र बाद और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रारम्भ के कुछ पहले हुआ। लेकिन यह भी सत्य है कि, नालंदा एक शैक्षिक केन्द्र के रूप में 1193 में पूरी तरह से नष्ट नहीं हुआ था और कुछ ऐसे लिखित प्रमाण हैं जिनके बल पर यह ज्ञात होता है कि कुछ शिक्षण को अगली सदी में पुनर्जीवित किया गया था, और छात्रों का, विशेष रूप से तिब्बत से, शिक्षा हेतु नालंदा आने का क्रम जारी रहा। लेकिन नालंदा ने अपना अविरत संस्थागत आधार, अपनी परंपरा की उत्कृष्टता, और उच्च शिक्षा के एक केन्द्र के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को खो दिया था।

नालंदा एक आवासीय विश्वविद्यालय था, और इसके चरमोत्कर्ष पर 10000 विद्यार्थी यहाँ विविध विषयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे और यहाँ के शिक्षकों की संख्या लगभग 2000 थी। अभी तक नालंदा के विस्तृत क्षेत्र के मात्र दस प्रतिशत की ही खुदाई की गई है। तथापि, हम जानते हैं, कि सातवीं शताब्दी में परिसर में आठ अलग–अलग अहाते, बड़ी संख्या में कक्षाएं और ध्यान केंद्र या अध्ययन कक्ष तथा सुव्यवस्थित झीलें व पार्क और उल्लेखनीय शयनगृहों के समूह थे। येल स्कूल ऑफ

NU hindi annual report.indd x17 29-Apr-14 2:52:34 PM

मैनेजमेंट के पूर्व अध्यक्ष जेफरी गार्टेन ने सुझाव दिया है कि नालंदा विश्व में छात्रों के लिए शयनगृहों वाला पहला शैक्षणिक संस्थान हो सकता है।

सातवीं शताब्दी में चीनी विद्यार्थियों, विशेष रूप से – ह्वेन्सांग और यीजिंग ने नालंदा का उच्च शैक्षिक स्तर देखा और वहाँ उन्हें विशेष रूप से क्या पसंद आया उसके विषय में विस्तृत रूप से लिखा। वास्तव में, प्राचीन चीन के इतिहास में, चीन के बाहर नालंदा एकमात्र शैक्षणिक संस्थान है, जहां कोई चीनी विद्वान उच्च शिक्षा के लिए गया था।

मैं अब उस ओर बढ़ता हूँ जिसे नालंदा की परंपरा कहा जा सकता है। इसे आंकने के लिए यह समझना महत्वपूर्ण होगा कि नालंदा एक बड़ी शैक्षिक संस्कृति का हिस्सा था। जबकि नालंदा निश्चित रूप से बहुत ही महत्वपूर्ण था, वह एक व्यवस्थित शिक्षा के व्यापक तंत्र का हिस्सा था जो उस समय भारत और विशेषतया बिहार में विकसित हुई। नालंदा के अलावा, उस क्षेत्र में विक्रमशिला और ओदन्तपुरी जैसे उच्च शिक्षा के और भी संस्थान थे, जो नालंदा के साथ पंक्तिबद्ध थे। यह साक्ष्य मिलते हैं कि ये संस्थान आपस में विचार–विमर्श, सहयोग और यहाँ तक कि प्रतिस्पर्धा भी करते थे और इन्होंने एक साथ मिलकर प्राचीन बिहार में एक उच्चतर शैक्षिक समूह बना लिया था। हम उस समूह को नालंदा परिसर कह सकते हैं, केवल इस समूह में नालंदा की वरिष्ठता के कारण नहीं, बल्कि इसलिए भी कि बाद में स्थापित शैक्षिक प्रतिष्ठान नालंदा की अनूठी पहलों की सफलता से प्रभावित थे। नालंदा ने केवल विद्यार्थियों को शिक्षित और प्रशिक्षित ही नहीं किया अपितु इसने अन्य शैक्षिक संस्थानों को प्रेरित और प्रोत्साहित भी किया।

प्राचीन नालंदा में कौन–कौन से विषय पढ़ाये जाते थे? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए हमें समस्या होती है, क्योंकि बारहवीं शताब्दी के अंत में आक्रमणकारियों ने नालंदा के लेखों को अंधाधुंध तरीके से जला दिया था। हमें पता है कि प्राचीन नालंदा में 'प्रबोधन' (यहां तक कि बुद्ध का अर्थ 'प्रबुद्ध' है) के लिए बौद्ध आकर्षण के कारण विभिन्न प्रकार के विषय वहाँ पढाये जाते थे। और, इसके अलावा, नालंदा की केवल एक धार्मिक शिक्षा के केन्द्र के रूप में परिकल्पना नहीं की गयी थी। नालंदा में धर्म के अतिरिक्त इतिहास, कानून, भाषाविज्ञान, चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य, और वास्तुकला और मूर्तिकला, के साथ ही खगोल शास्त्र जैसे विषय सम्मिलित थे। वह ऊँची वेधशाला जो ह्वेन्सांग के वर्णानुसार सातवीं सदी में नालंदा में सुबह के कोहरे में शिखर को छूती थी, नालंदा की खगोलीय शिक्षा का सुचित्रित प्रमाण है।

गणित के बारे में क्या? हम यह जानते हैं कि तर्क एक विषय था जो कि नालंदा में पढ़ाया जाता था, और यह गणित के समीप ही है। लेकिन यह कोई कम महत्वपूर्ण बात नहीं, कि खगोल शास्त्र का अनुगमन निश्चित रूप से गणित के अध्ययन से और विशेषतया त्रिकोणमिति से जुड़ा हुआ था। दरअसल, जब चीन में कार्य करने के लिए भारत के खगोलविदों को भर्ती किया गया (उनमें से भर्ती एक खगोलविद, गौतम सिद्धार्थ तो आठवीं शताब्दी में चीन की ताकतवर खगोल शास्त्र समिति का अध्यक्ष बन गया था), चीनी विशेष रूप से उन खगोलविदों को काम करने के लिए भर्ती करते थे जिन्हें गणितीय ज्ञान और कौशल में प्रवीणता

NU hindi annual report.indd x18 29-Apr-14 2:52:34 PM

हो। पांचवीं शताब्दी के प्रारंभ में बड़ी संख्या में भारतीय गणितज्ञ, भारतीय स्कूल के महान संस्थापक आर्यभट्ट सहित, नालंदा से केवल लगभग पचास मील की दूरी पर पाटलीपुत्र या पटना के निकट कुसुमपुर में थे। मेरा यह विश्वास है कि जब अनखुदे अवशेष, जोकि नालंदा के खंडहरों का दस में से नौंवा भाग हैं की खुदाई होगी, नालंदा के पाठ्यक्रम में गणितीय अंश के साक्ष्य अंततः अवश्य उभरेंगे।

नवीन विश्वविद्यालय

ईस्ट एशिया शिखर सम्मेलन के एक प्रस्ताव तथा चीन, जापान, कोरिया, सिंगापुर, थाईलैंड और ईस्ट एशिया शिखर में शामिल अन्य देशों के सहयोग से एक नया नालंदा विश्वविद्यालय, पुरानी जगह के समीप, भारतीय संसद के एक अधिनियम के माध्यम से स्थापित किया जा रहा है। इसे बिहार सरकार का महत्वपूर्ण समर्थन मिला है, जिसने आरंभ में इसका प्रस्ताव रखा था, और जिसे भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी का बहुमूल्य समर्थन मिला, जिन्होंने इस परियोजना के पहले कुलाध्यक्ष के रूप में इसके विषय में अपनी सलाह दी थी।

नालंदा की अब पुनर्स्थापना के कई महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं। प्रथम यह, कि भले ही एशिया की भारत सहित उच्च शिक्षा की एक लंबी परंपरा रही है, किन्तु आज के सभी महान विश्वविद्यालय मुख्य रूप से पश्चिम में हैं। यह आशा करना कि बहुत कम समय में नालंदा अपनी विशिष्टता बना लेगा, असंगत होगा, परन्तु यह एक दूरगामी लक्ष्य है, जिसे पाने का प्रयास नये नालंदा को करना है। प्राचीन नालंदा इस के लिए एक महान प्रेरणा हो सकता है।

द्वितीय, प्राचीन नालंदा पूरे एशिया के परस्पर सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण था। एशिया भर में फैले शैक्षिक संस्थानों का एक जाल था, जिनके संबंध नालंदा से थे। उदाहरण के लिए, कुछ चीनी विद्वानों ने समुद्र मार्ग से भारत और भारत के रास्ते में मुख्य रूप से सुमात्रा से उस संस्थान से जिसे तब श्रीविजया कहते थे, संस्कृत सीखी। यह पुनरुद्धार भी संपूर्ण एशिया का ही प्रस्ताव है। सिंगापुर में पहले से ही एक नालंदा– श्रीविजया केंद्र कार्य कर रहा है और चीन, कोरिया, जापान, थाईलैंड और अन्य स्थानों पर विश्वविद्यालयों से भी सहयोग के लिए प्रस्ताव खोजे जा रहे हैं।

तृतीय, एशियाई देशों में राजनैतिक दृष्टिकोण और व्यवहार में कई मतभेद हैं, और ये मतभेद बहुत जल्द दूर नहीं होंगे। लेकिन एक–दूसरे के साथ शांति से रहना और जहां तक संयुक्त कार्रवाई संभव है, उन क्षेत्रों में सहयोग करना महत्वपूर्ण है। यह शिक्षा और अनुसंधान में एशिया के सभी देशों के साथ सहयोग पर लागू होता है।

चौथा, व्यापक वैश्विक परिप्रेक्ष्य के अलावा, नया नालंदा अपने आसपास और क्षेत्र में रचनात्मक भूमिका निभा सकता है। यद्यपि लगभग एक हजार वर्षों के लिए बिहार भारतीय सभ्यता का उद्गम स्थल था, परन्तु अब यह एक तेजी से बढ़ते भारत का एक बहुत पिछड़ा हिस्सा है। बिहार को त्वरित विकास की आवश्यकता है और

NU hindi annual report.indd x19 29-Apr-14 2:52:34 PM

नालंदा इसमें प्रेरणा से अधिक, परिवर्तन के एक सक्रिय प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर सकता है। इस प्रयास को विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यावरण अध्ययन, प्रबंधन और विकास के अध्ययन और बिहार की समस्याओं की तत्काल प्रासंगिकता के अन्य विषयों पर नये नालंदा में अध्यापन द्वारा सहायता मिलेगी।

दृष्टिकोण तथा चुनौती

प्राचीन नालंदा में स्पष्ट रूप से ज्ञान को समझने और प्रसारित करने की लालसा थी। यह एक कारण था कि इसने विदेशी छात्रों को स्वीकार करने में अपनी उत्सुकता दिखाई। चीन से नालंदा पहुंचने पर इस प्रकार की गर्मजोशी से स्वागत होने का उल्लेख ह्वेन त्सांग और यिजिंग ने किया है। वास्तव में, ह्वेन त्सांग ने ज्ञान के प्रसार के आह्वान का वचन नालंदा के शिक्षकों को तब दिया जब उन्हें नालंदा में अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् शिक्षक बने रहने को कहा गया था। उन्होंने अपनी प्रतिबद्धता का उल्लेख किया, और यहां उन्होंने स्वयं बुद्ध को उद्धरित करते हुए समस्त विश्व में ज्ञान का प्रसार करने को कहा। उन्होंने एक आलंकारिक प्रश्न पूछाः 'कौन उन लोगों को भूल कर जिन्हें अभी ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई है, इस आनंद को अकेले भोगना चाहेगा?'

यदि ह्वेन त्सांग ने नालंदा की परंपरा का प्रसार समस्त भूभाग में करने का कार्य किया था, तो पुनरुद्धार प्रयास, जिसमें हम व्यस्त हैं, को भी इस परंपरा को समय वास्तव में कई शताब्दियों के पार वैश्विक प्रसार के प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिए। आधुनिक विश्व के पास अतीत के लोगों को देने के लिए बहुत कुछ है, जिसे पाकर वे रोमांचित हो उठते। परन्तु अतीत की बौद्धिक सफलता के भी कुछ महान उदाहरण हैं जो हमें आज भी प्रेरित और सूचित दोनों कर सकते हैं, और हमारे शैक्षिक और सामाजिक पुनरुथान में योगदान दे सकते हैं।

NU hindi annual report.indd x20 29-Apr-14 2:52:34 PM

इस प्रकार नालंदा पहल, ऊर्जा, प्रतिबद्धता और दृष्टिकोण का एक शानदार उदाहरण है। एक नये नालंदा विश्वविद्यालय के लिए काम करने की चुनौती उठाना वास्तव में रोमांचक है, जो एक भव्य शैक्षिक दृष्टिकोण के आधार पर विश्व के इतने बड़े हिस्से प्रेरित किया करता था। हमें उन सभी की मदद की आवश्यकता है जो इस दृष्टिकोण को सच करने में योगदान दे सकें।

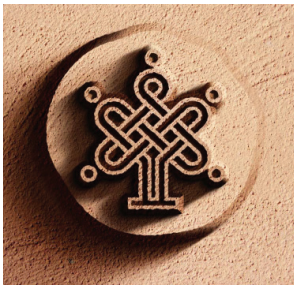

NU hindi annual report.indd x21 29-Apr-14 2:52:34 PM

उपकुलपति की रिपोर्ट

नालंदा विश्वविद्यालय विधेयक संसद में पारित किये जाने के पश्चात् पर इसके एक अधिनियम के रूप में अधिसूचित किये जाने के पहले, औपचारिक रूप से नालंदा विश्वविद्यालय के निर्माण की प्रक्रिया तब आरम्भ हुई जब उपकुलपति (नामित) ने 8 अक्टूबर, 2010 को अपना कार्यभार संभाला। विश्वविद्यालय के एकमात्र कर्मचारी के रूप में, उपकुलपति (नामित) को नालंदा संरक्षक समूह के जनादेश को लागू करने और औपचारिक रूप से विश्वविद्यालय की स्थापना का कार्य सौंपा गया।

सबसे पहला कार्य था एक कार्यालय बनाना जहां से विश्वविद्यालय संचालित किया जा सके और अपनी पहचान बना सके। बिहार सरकार ने एक साल पहले ही कार्यालय की जगह देख ली थी विश्वविद्यालय द्वारा उपयोग किये जाने की प्रतीक्षा में इस स्थान पर ताला पड़ा हुआ था। इस विश्वविद्यालय कार्यालय ने भारतीय भवन कांग्रेस भवन, प्रथम तल, सेक्टर 6 आर. के. पुरम, नई दिल्ली, से कार्य करना प्रारंभ किया और इस रिपोर्ट के तैयार होने तक वहाँ से कामकाज जारी रखा।

आर.के.पुरम दिल्ली स्थित नालंदा विश्वविद्यालय का कार्यालय।

NU hindi annual report.indd x22 29-Apr-14 2:52:34 PM

इस कार्यालय को निवासनीय बनाने का कार्य विदेश मंत्रालय, भारत सरकार में इस प्रमुख परियोजना में शामिल अधिकारियों के साथ एक प्रारंभिक बैठक द्वारा आरम्भ हुआ। अगला महत्वपूर्ण कार्य ऐसे कर्मचारियों की खोज करना था जो इस कार्यालय को चला सकें। इसमें सबसे पहले व मुख्यतः साफ–सफाई से संबद्ध कर्मचारियों की खोज करना था और ऐसे कर्मचारियों की खोज करना था जो विश्वविद्यालय का सामान्य प्रशासन व वित्त आदि को संभाल सके ताकि विश्वविद्यालय का एक बैंक खाता हो सके और लेखन सामग्री और उपकरणों आदि के लिए आवश्यक खर्चों को उठा सके। हमारे पहले दो कर्मचारी, दोनों वित्त और प्रशासन विभाग में थेः श्री एस. एल. शर्मा और श्री आर.एस. माथुर और दोनों ही भारतीय नियंत्रक और महा लेखा (कैग) कार्यालय से सेनानिवृत हो चुके थे।

इस परियोजना पर कार्य शुरू करने के लिए साईट का दौरा अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा था। बिहार में चुनावों और धार्मिक छुट्टियों के कारण, उपकुलपति नवंबर 2010 की शुरुआत में अपनी पहली यात्रा में केवल पटना, राजगीर, नालंदा और बोधगया का दौरा कर सकीं। वह न केवल प्रस्तावित स्थल पर गयी, अपितु प्राचीन नालंदा के अवशेषों और बोधगया के मंदिर की भी यात्रा की। उनकी पटना और राजगीर में राज्य प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों से सरकार द्वारा विश्वविद्यालय को भूमि के हस्तांतरण व विश्वविद्यालय को राजगीर में अस्थायी कार्यालय के लिए स्थान देने के संबंध में भी महत्वपूर्ण बैठकें हुई। विश्वविद्यालय 450 एकड़ भूमि के परिसर तक, प्राचीन नालंदा के अवशेषों से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर राजगीर में स्थित होगा।

उपकुलपति तथा विशेष कार्याधिकारी (शैक्षिक मामले) की नालंदा अवशेषों की यात्रा।

NU hindi annual report.indd x23 29-Apr-14 2:52:35 PM

राज्य चुनावी दौर में था अतः आचार संहिता के लागू होने के कारण मुख्यमंत्री तथा अन्य अधिकारीगण उपलब्ध नहीं थे तथा अन्य कर्मचारी चुनाव कार्य में संलग्न थे। उपकुलपति की मुख्यमंत्री के साथ बैठक दिसंबर 2010 में राजगीर सांस्कृतिक महोत्सव के दौरान संभव हो सकी। उपकुलपति तथा मुख्यमंत्री के मध्य एक लंबी व उपयोगी बैठक हुई जहां भविष्य की योजनाओं के बारे में चर्चा की गयी।

विश्वविद्यालय हेतु राजगीर के निकट प्रस्तावित स्थल।

राजगीर महोत्सव के अवसर पर विश्वविद्यालय की उपकुलपति।

NU hindi annual report.indd x24 29-Apr-14 2:52:35 PM

इसके पश्चात् दिसम्बर 2010 में प्रबंधन मंडल की एक उपसमिति की, प्रोफेसर अमर्त्य सेन की अध्यक्षता में, विश्वविद्यालय के जीवन के प्रारंभिक महीनों का जायजा लेने के लिए नई दिल्ली में बैठक हुई। समिति ने वित्तीय नियम बनाए ताकि वह आसानी से खर्चे वहन कर सके (विश्वविद्यालय को तब तक निर्माण कोष की पहली किश्त विदेश मंत्रालय से हस्तांतरित हो चुकी थी)। उपसमिति ने विशेष कार्याधिकारी (विश्वविद्यालय के विकास और शैक्षिक मामलों) की नियुक्ति को मंजूरी दे दी जोकि तत्काल पदभार ग्रहण कर विश्वविद्यालय को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तथा भारत में शैक्षिक और प्रशासनिक स्तर पर स्थापित कर सके।

इस तथा बाद की सभी बैठकों में, अन्य स्रोतों से धन के विषय पर चर्चा की गयी तथा कुछ पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के सदस्य देशों से धन की संभावनाओं के बारे में भी जानकारी ली गयी। विदेश मंत्रालय ने 10 लाख अमेरिकी डॉलर का योगदान देने के चीन के वचन की भी बात कही। ऑस्ट्रेलियाई सरकार द्वारा पारिस्थितिकी और पर्यावरण के विद्यालय की स्थापना में और सिंगापुर के कुछ बौद्ध संगठनों द्वारा पुस्तकालय के भवन निर्माण हेतु वित्तीय सहायता का वचन दिया गया।

दिल्ली में विशेषज्ञों और प्रशासकों के साथ कई बैठकों में विश्वविद्यालय के विधियों और नियमों तथा वास्तुकारों से परिसर के मास्टर प्लान और वास्तुशिल्प के विभिन्न चरणों के विषय में चर्चा हुई। डिजाइनरों और ब्रांड प्रबंधकों के साथ बैठक में विश्वविद्यालय के वेब तथा प्रतीक चिन्ह के विकल्पों पर विचार हुआ। संक्षेप में विश्वविद्यालय के सभी पहलुओं, जिनमें वास्तविक दुनिया में इनकी उपस्थिति भी शामिल थी, पर कार्य हुआ ताकि लोग इससे जुड़ सकें और इसकी प्रगति के विषय में जान सकें।

जनवरी 2011 में, उपकुलपति ने नालंदा – श्रीविजया केन्द्र के निमंत्रण पर नालंदा विश्वविद्यालय पर एक व्याख्यान देने के लिए सिंगापुर की यात्रा की। नालंदा–श्रीविजया केंद्र जो इंस्टिट्यूट ऑफ साउथईस्ट एशियन स्टडीज, सिंगापुर, में स्थित है, 2009 में अपनी स्थापना के बाद से ही नालंदा विश्वविद्यालय के एक ऐसे केंद्र के रूप में प्राधिकृत है जो ऐसे शोध करेगा जो भविष्य में नालंदा विश्वविद्यालय को करने हैं।

NU hindi annual report.indd x25 29-Apr-14 2:52:36 PM

संयोग देखिए कि यह नालंदा विश्वविद्यालय की उपकुलपति का पहला अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध था जिसमें उन्होंने विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण को एक व्यापक दर्शक दीर्घा के समक्ष रखा। विदेश सचिव, सुश्री निरुपमा राव भी सिंगापुर में उपस्थित थीं और उन्होंने भी उपकुलपति से विश्वविद्यालय के प्रगति के विषय में चर्चा की।

जनवरी 2011 डॉ. अंजना शर्मा विश्वविद्यालय में एक विशेष कार्याधिकारी के रूप में शामिल हुईं, जिनका कार्य अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, और शैक्षणिक योजना (विश्वविद्यालय के विकास और शैक्षणिक मामलों) पर ध्यान देना था। डा० शर्मा दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रतिनियुक्ति पर आई हैं। इसके अतिरिक्त श्री सुधीर कुमार जो विदेश मंत्रालय से सेवानिवृत्त हुए थे और विदेश मंत्रालय द्वारा दोबारा सलाहकार बनाए गए थे, उन्हें मंत्रालय ने नालंदा विश्वविद्यालय कार्यालय में प्रतिनियुक्ति पर भेजा है। इस प्रकार विश्वविद्यालय कार्यालय अपने कार्य के अनुरूप बढ़ रहा था।

सिंगापुर के नालंदा श्रीविजया केंद्र पर विश्वविद्यालय की उपकुलपति।

NU hindi annual report.indd x26 29-Apr-14 2:52:36 PM

फरवरी 2011 में डॉ. शर्मा ने उपकुलपति के साथ पहली बार योजना स्थल का दौरा किया। फरवरी 4 को यात्रा के दौरान बिहार सरकार ने प्रासंगिक कागजात के साथ भूमि का कब्जा उपकुलपति को सौंपा। प्रोफेसर अमर्त्य सेन जोकि वहाँ का दौरा करने वाले थे, अंतिम क्षण में अस्वस्थता के कारण यात्रा करने में असमर्थ रहे। बिहार सरकार के अधिकारियों ने नालंदा विश्वविद्यालय के अधिकारियों को राजगीर में कार्यालय के लिए निर्धारित भूमि और अतिथि सदन के लिए चिन्हित स्थान भी दिखाया। विश्वविद्यालय को हस्तांतरित कुल भूमि लगभग 450 एकड़ थी।

उसी समय विश्वविद्यालय अधिकारियों और बिहार सरकार के एक प्रतिनिधि ने श्री परवेज आलम को राजगीर कार्यालय के समन्वयक के रूप में नियुक्त किया और उन्होंने मार्च 2011 में राजगीर में पदभार ग्रहण किया। इस प्रकार विश्वविद्यालय बिहार सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये अस्थायी स्थान पर राजगीर कार्यालय की शुरुआत करने में सक्षम हुआ।

मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमार की उपस्थिति में प्रस्तावित स्थल के दस्तावेजों का हस्तांतरण।

राजगीर स्थित अस्थायी कार्यालय।

NU hindi annual report.indd x27 29-Apr-14 2:52:37 PM

नालंदा विश्वविद्यालय के प्रबंधन मंडल की पहली बैठक 21 और 22 फरवरी, 2011 को दिल्ली में हुई।

मंडल को एक संस्था की खोज करने के लिए उठाए गए कदमों के बारे में जानकारी दी गई जोकि नालंदा विश्वविद्यालय की रूपरेखा को पहचान प्रदान कर सके। इस क्रिया में विश्वविद्यालय के प्रतीक चिन्ह की पहचान बनाने की प्रक्रिया शामिल होगी, जोकि प्रभावी ढ़ंग से नालंदा संरक्षक समूह द्वारा बनाये गए दृष्टिकोण के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय के अंतर्निहित सृजन का प्रसार करेगी।

विश्वविद्यालय के तथा और इसकी प्रगति के बारे में जागरूकता फैलाने के जनादेश को ध्यान में रखते हुए मार्च 2011 में उपकुलपति ने नई दिल्ली में इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स द्वारा आयोजित सम्मलेन दिल्ली वार्ता 3 बियॉन्ड द फर्स्ट ट्वेंटी इयर्स ऑफ इंडो–एशियन इंगेजमेंट में नालंदा इज ए सिंबल ऑफ एशियन रेनेसां नामक शीर्षक पर एक व्याख्यान दिया। अपनी पिछली बैठक में प्रबंधन परिषद् के अनुमोदन के बाद अप्रैल में विशेष कार्याधिकारी, डॉ. अंजना शर्मा ओएसडी (विश्वविद्यालय विकास और शैक्षिक कार्य) और उपकुलपति ने होनोलूलू में हुए एसोसिएशन ऑफ एशियन स्टडीज (आस) में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया। यह एक सफल यात्रा रही जिसमें पूरे विश्व के एशियाई विद्वानों के साथ बातचीत हुई। उन्होंने आस अध्यक्ष, येल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एस शिवरामकृष्णन के साथ मुलाकात की और टोरंटो में मार्च 2012 में आगामी आस सम्मेलन में, नालंदा विश्वविद्यालय के निर्माण हेतु एक गोलमेज सम्मलेन करने की प्रतिबद्धता का संकेत दिया।

अप्रैल 2011 में उपकुलपति और प्रशासनिक अधिकारी, श्री एस.एल.शर्मा ने राजगीर का दौरा किया और नालंदा जिले में राजस्व तथा जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ बैठक की ताकि कार्यस्थल को अधिकार में लेने की विधि और प्रक्रिया को सहज और सुविधाजनक बनाया जा सके। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय के राजगीर कार्यालय को बनाने की पहल की।

मई 2011 में विभिन्न मामलों पर चर्चा करने के लिए बुलाई गयी स्थायी समिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि डिजाइन बनाने का अनुबंध मेसर्स रे + केशवन, बंगलौर की एक डिजाइन फर्म को दिया जाना चाहिए। उसके बाद कंपनी ने विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण को समझने के लिए परिषद् के सभी सदस्यों और अन्य लोगों से संपर्क किया जो इस परियोजना से जुड़े थे, ताकि वह सही ढ़ंग से नालंदा विश्वविद्यालय के लक्ष्य, दृष्टिकोण और मूल्यों को समझ सके और ऐसा डिजाइन बनाएं जो विश्वविद्यालय के प्रतीक चिन्ह का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम हो।

साथ ही मई 2011 में पहले अधिनियम बनाये गए और प्रबंधन मंडल के सदस्यों को भेजे गए और उनका समर्थन नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम के प्रभाव में आने के छह महीने के भीतर 25 मई तक मिल गया।

NU hindi annual report.indd x28 29-Apr-14 2:52:37 PM

डॉ. शर्मा और उपकुलपति ने विभिन्न ईएएस देशों के प्रतिनिधियों के साथ–साथ भारत में स्थित ऑस्ट्रेलियाई उच्चायोग से ऑस्ट्रेलिया सरकार द्वारा वित्त पोषण के तरीके पर चर्चा करने के लिए मिलने की प्रक्रिया को जारी रखा। उन्होंने चीनी दूतावास के अधिकारियों के साथ अक्टूबर 2011 में बीजिंग प्रबंधन मंडल की बैठक के आयोजन और 1 मिलियन डॉलर के योगदान की चीन की पेशकश पर विचार विमर्श भी किया।

जून 2011 में एजुकेशनल कंसल्टेंट्स इंडियन लिमिटेड (ईडीसीआईएल), जिसने बिहार सरकार के लिए नालंदा विश्वविद्यालय पर एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार किया था, को 2007 में अब एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में परिभाषित नालंदा विश्वविद्यालय के लिए एक ताजा और अद्यतन डीपीआर तैयार करने का निर्देश दिया गया। अगले कुछ महीनों में यूनिवर्सिटी अधिकारियों ने डीपीआर की तैयारी के सिलसिले में ईडीसीआईएल के अधिकारियों के साथ कई घंटों तक बैठकें कीं।

अंतरिम कार्य शुरू होने के साथ कार्यालय के भीतर और आगंतुकों के साथ बैठकों के लिए एक निर्धारित स्थल की आवश्यकता को देखते हुए, अक्टूबर 2010 में नई दिल्ली में नालंदा विश्वविद्यालय के कार्यालय का स्थान अनुपयुक्त सिद्ध हुआ। न केवल वर्तमान आवश्यकताओं, बल्कि भविष्य में दिल्ली में विश्वविद्यालय की आवश्यकताओं को देखते हुए वह कार्यालय के लिए उपयुक्त और अनुकूल स्थान का पता लगाने में सक्षम हुआ। इस स्थान को किराये पर लेने के लिए परिषद् के अनुमोदन के बावजूद विश्वविद्यालय लीज के पट्टे पर हस्ताक्षर लेने में असमर्थ रहा, क्योंकि ट्रस्ट, जो इस स्थान का मालिक था, इस स्थान को किराए पर देने के लिए अपेक्षित प्राधिकारियों का अनुमोदन प्राप्त नहीं कर सका।

इसलिए विश्वविद्यालय ने यह तय किया कि वह आर.के.पुरम में अपने वर्तमान कार्यालय से कार्य करना जारी रखेगा – यद्यपि न तो यह एक बेहतर कार्य स्थान था और न ही नालंदा विश्वविद्यालय जैसी एक संस्था के कार्यालय के लिए उपयुक्त स्थान था। विश्वविद्यालय ने वर्तमान कार्यालय में थोड़ी–बहुत मरम्मत का कार्य करवाया और विश्वविद्यालय में कुछ नए अधिकारियों के लिए कुछ अतिरिक्त केबिन भी बनवाये।

राजगीर में, परियोजना स्थल पर, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया, बिहार सरकार ने अनौपचारिक रूप से राजगीर में स्वास्थ्य विभाग के पुराने सब–डिवीजन कार्यालय के इमारत की पहली मंजिल विश्वविद्यालय को उपलब्ध कराई, जब तक कि राजगीर में विश्वविद्यालय परिसर तैयार न हो जाए। यह एक पुराना भवन है और नालंदा विश्वविद्यालय के कार्यालय के रूप में प्रदत्त कार्यालय के रूप उपयोग करने के लिए इसे व्यापक मरम्मत कार्य की आवश्यकता है। जल आपूर्ति और स्वच्छता जैसी साधारण सुविधाएं भी इस परिसर में उपलब्ध नहीं है। विश्वविद्यालय ने जल आपूर्ति की व्यवस्था करने और इस कार्यालय में स्वच्छता सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु कुछ प्रारंभिक संविदा दरों की मांग की है।

NU hindi annual report.indd x29 29-Apr-14 2:52:37 PM

बिहार सरकार को विश्वविद्यालय कार्यालय परिसर के उपयोग को औपचारिक रूप से प्राधिकृत करने में कुछ समय लगा। इस घोषणा के अभाव में, इस कार्यालय के रखरखाव पर किसी भी व्यय को अधिकृत करना संभव नहीं था। विश्वविद्यालय को बिहार सरकार से औपचारिक सूचना 11 सितम्बर 2011 को प्राप्त हुई। इसके पश्चात् विश्वविद्यालय ने किराए का निर्धारण किया और कार्यालय और उसके परिसर में आवश्यक मरम्मत और साफ–सफाई की, जिस से कि यह कार्यालय प्रयोग में लाने के लिए उपयुक्त बना सके।

विश्वविद्यालय ने बिहार सरकार से पूर्ण परिसर, जहां कार्यालय भवन स्थित है, को देने का अनुरोध किया, जिससे कि विश्वविद्यालय के आस–पास की सभी खाली जगह और परिसर में अन्य भवन जो प्रयोग में नहीं हैं की साफ–सफाई हो सके तथा विश्वविद्यालय उस परिसर की सुरक्षा भी कर सके।

प्रबंधन मंडल की अगली बैठक जुलाई 2011 में पटना में हुई। उस बैठक में मंडल को सूचित किया गया कि भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने विश्वविद्यालय कुलाध्यक्ष बने रहने की अनिच्छा जताई है क्योंकि उनका यह मानना है कि नालंदा विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठानुसार भारत के पदासीन राष्ट्रपति ही विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष होने चाहिए। प्रबंधन मंडल ने यह निर्णय लिया कि अध्यक्ष एक बार फिर डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने का अनुरोध करने हेतु लिखेंगे और मंडल की सर्वसम्मत आशा है कि परिषद् को विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में उनका निरन्तर योगदान प्राप्त होता रहेगा। डॉ. कलाम ने खेद व्यक्त किया लेकिन विश्वविद्यालय को पूर्ण समर्थन देने का वचन और आश्वासन दिया है और अध्यक्ष को यह भी कहा कि वह सलाह के लिए सभी समय पर उपलब्ध रहेंगे। डॉ कलाम और प्रोफेसर अमर्त्य सेन नई दिल्ली में अक्टूबर 2011 में मिले।

श्री जॉर्ज येओ; प्रो. नाकानिशी तथा डॉ. तानसेन सेन सिंगापुर में एम्बेसेडर केश्वापाणी के साथ नालंदा खंडहरों पर।

NU hindi annual report.indd x30 29-Apr-14 2:52:37 PM

जुलाई 2011 में मंडल की बैठक में राजगीर में प्रस्तावित परिसर के चहारदीवारी बनाने का अनुबंध बिहार राज्य पुल निर्माण निगम लिमिटेड (बीआरपीएनएन), बिहार की सरकार की एक एजेंसी को दिया गया। बैठक के तुरंत बाद विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने बीआरपीएनएन से संपर्क किया और प्रस्तावित समझौते पर वार्ता शुरू की।

मंडल ने विशेष कार्याधिकारी (वित्त) के रूप में डॉ. पद्माकर मिश्रा की भी नियुक्ति को स्वीकृति दी। डा० मिश्रा जिन्होंने 12 अगस्त, 2011 को नालंदा विश्वविद्यालय का कार्यभार संभाला, दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रतिनियुक्ति पर आये हैं।

जुलाई 2011 की बैठक में प्रबंधन मंडल ने नालंदा विश्वविद्यालय के वृहद् लक्ष्य और दृष्टि के विषय में वृहद् वैश्विक जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रख्यात व्यक्तियों के एक अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार दल के गठन का निर्णय किया। यह दल प्रबंधन मंडल द्वारा निर्धारित अन्य कार्य व प्रकार्य कर सकता है। श्री जॉर्ज यीओ को इस दल का प्रथम अध्यक्ष घोषित किया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि इस दल के संविधान को एक पृथक कानून के माध्यम द्वारा बनाया जाएगा।

मंडल की जुलाई की बैठक में प्रथम चरण में दो विद्यालयों की स्थापना करने का निर्णय लिया गया – यानि कि ऐतिहासिक अध्ययन और पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्यन। विश्वविद्यालय इन दोनों विभागों से ही अपने शैक्षिक उद्यम की शुरूआत करेगा।

ऐतिहासिक अध्ययन का विभाग बनाने की उप समिति और वास्तुकला संबंधी उप समिति के गठन पर एक बैठक 8–9 अगस्त, 2011 को कोलकाता में हुई जिसमें प्रोफेसर सुगाता बोस, लार्ड मेघनाद देसाई, डॉ. तानसेन सेन, डॉ. गोपा सभरवाल और डॉ. अंजना शर्मा ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय के प्रस्तावित स्थल की चहारदीवारी के निर्माण का कार्य।

NU hindi annual report.indd x31 29-Apr-14 2:52:37 PM

सितंबर 2011 में विश्वविद्यालय को प्रबंधन मंडल के सचिव द्वारा सूचित किया गया कि भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष का पद ग्रहण कर लिया था, जैसा कि अधिनियम में निर्धारित किया गया था। यह एक स्वागत योग्य निर्णय था, क्योंकि कई औपचारिक कार्यों के लिए कुलाध्यक्ष के अनुमोदन की आवश्यकता पड़ती थी।

सितम्बर, 2011 में उपकुलपति ने इंडिया जापान ग्लोबल पार्टनरशिप शिखर सम्मलेन में भाग लेने के लिए टोक्यो का दौरा किया। नालंदा विश्वविद्यालय परिषद् के सदस्य, श्री एन.के.सिंह और श्री जॉर्ज यीओ भी इस बैठक में सम्मिलित हुए। श्री सिंह और उपकुलपति ने नवनियुक्त जापानी विदेश मामलों के वरिष्ठ उप मंत्री और अन्य अधिकारियों के साथ नालंदा विश्वविद्यालय के लिए जापानी अनुदान के संबंध में एक बैठक भी की।

उपकुलपति ने प्रोफेसर नाकानिशी, जो टोक्यो नहीं आ सके, से मुलाकात के लिए क्योटो की यात्रा भी की तथा उन्हें टोक्यो की घटनाओं का संक्षिप्त विवरण भी दिया। प्रोफेसर नाकानिशी ने भी उपकुलपति को क्योटो विश्वविद्यालय के अध्यक्ष के साथ हुई अपनी मुलाकात के विषय में बताया और यह सुझाव दिया कि नालंदा विश्वविद्यालय को नवंबर में उनके साथ एक बैठक करने का प्रयास करना चाहिए।

टोक्यो में भारत – जापान वैश्विक सहभागिता सम्मेलन के दौरान विश्वविद्यालय की उपकुलपति, श्री एन.के.सिंह व श्री जॉर्ज येओ।

NU hindi annual report.indd x32 29-Apr-14 2:52:37 PM

7 अक्तूबर, 2011 को नई दिल्ली में विश्वविद्यालय ने अपने पहले सार्वजनिक कार्यक्रम (एक खुला सत्र) ''ए 21st सेंचुरी यूनिवर्सिटीः (री)कालिंग द पास्ट'' की मेजबानी की। इस आयोजन में बहुत लोगों ने भाग लिया और इसकी अध्यक्षता प्रोफेसर प्रताप भानु मेहता ने की, जिसमें अध्यक्ष, प्रोफेसर अमर्त्य सेन, प्रोफेसर सुगाता बोस और डॉ. गोपा सभरवाल ने विश्वविद्यालय के विषय में व्याख्यान दिए और प्रश्नों के उत्तर दिए। विश्वविद्यालय की वेबसाइट (www.nalandauniversity.org) इस कार्यक्रम के दौरान लाइव की गयी। बाद में हमें www.nalandauniv.edu.in के रूप में एक नई पहचान मिली।

नई दिल्ली में आयोजित विश्वविद्यालय का खुला सत्र।

NU hindi annual report.indd x33 29-Apr-14 2:52:38 PM

विश्वविद्यालय की स्थापना के वर्ष में संचालक मंडल की तीन बार बैठकें हुईं, जिनमें गहराई से प्रगति की निगरानी व निर्धारित दृष्टि की दिशा में विश्वविद्यालय को संचालित करने का निरीक्षण किया गया. संचालक मंडल ने 14 और 15 अक्टूबर, 2011 को बीजिंग में अपनी तीसरी बैठक का आयोजन किया. चीन के पीपुल्स गणराज्य के विदेश मंत्रालय ने शालीनता से बीजिंग में संचालक मंडल के ठहरने और क्सियन की यात्रा की व्यवस्था की, जो विद्वान ह्वेन्सांग के माध्यम से नालंदा से जुड़ा है।

बीजिंग की बैठक नालंदा विश्वविद्यालय परियोजना के क्रियान्वयन के चरण की ओर पारगमन के रूप में चिह्नित है। प्रबंधन मंडल ने दो विद्यालयों ऐतिहासिक अध्ययन और पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा को स्वीकार किया है। दोनों विद्यालय आवश्यक संकाय की नियुक्ति से शुरू हो जाएगा।

बैठक में मेसर्स रे + केशवन डिजाइन फर्म द्वारा विश्वविद्यालय के प्रतीक चिन्ह के लिए भेजे गए आठ डिजाइनों पर भी चर्चा हुई। प्रबंधन ने एक डिजाइन का चुनाव किया और अंतिम रूप से प्रतीक चिन्ह का चयन करने से पहले दूसरे रंगों में अन्य विकल्पों और अन्य रूपरेखा की भी मांग की। प्रबंधन से अनुमति के बाद प्रतीक चिन्ह का सार्वजनिक अनावरण 15 नवम्बर, 2011 को चीनी राजदूत द्वारा अंशदान सौंपने के दौरान किया गया।

सियान में स्थित ''वाइड गूज पैंगोडा'' स्थल पर प्रबंधन मंडल के सदस्य।

NU hindi annual report.indd x34 29-Apr-14 2:52:39 PM

परिसर की वैश्विक डिजाइन प्रतियोगिता 'मास्टर प्लान' आयोजित करने और परिसर के पहले भवन को आरम्भ करने की रूपात्मकता पर भी विचार विमर्श किया गया। बैठक में ईडीसीआईएल द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु ड्राफ्ट डीपीआर पर भी विचार किया गया।

नवंबर 2011 तक नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार प्रबंधक मंडल को पुनर्गठित करने का समय आ गया था। अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार कुछ निर्धारित सीट ईएएस सदस्य देशों के वित्तीय योगदान से जुड़ी थीं। यह प्रावधान अव्यवहारिक पाया गया और अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार नये प्रबंधक मंडल का गठन नहीं किया जा सका। इसलिए, विश्वविद्यालय के शासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए, प्रबंधक मंडल का कार्यकाल एक वर्ष (24 नवंबर, 2012 तक) के लिए या नए मंडल के गठन, जो भी पहले हो, तक के लिए बढ़ा दिया गया। यह विदेश मंत्रालय द्वारा एक गजट अधिसूचना जारी करके किया गया, जोकि केंद्र सरकार को विधेयक की धारा 41 (कठिनाइयों को दूर करने की शक्ति) के तहत प्राप्त थी।

चीनी राजदूत ने 15 नवंबर, 2011 को विश्वविद्यालय को दस लाख अमेरिकी डॉलर का अनुदान सौंपा। चीनी सरकार ने यह संकेत दिया है कि वह अपने अनुदान का उपयोग विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में एक चीनी तल बनाने में करना चाहती है।

थाईलैंड के राजदूत ने अपनी सरकार की ओर से 23 फरवरी, 2012 को एक लाख अमेरिकी डॉलर भेंट दिये। उन्होंने एक निजी कंपनी द्वारा दिए गए पांच हजार अमेरिकी डॉलर भी दिये। गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में जनवरी 2012 में भारत दौरे पर आई थाई प्रधानमंत्री व्यवसायिक घरानों के साथ चर्चा के बाद कुछ अन्य थाई कंपनियां भी विश्वविद्यालय में योगदान हेतु आगे आ रही हैं।

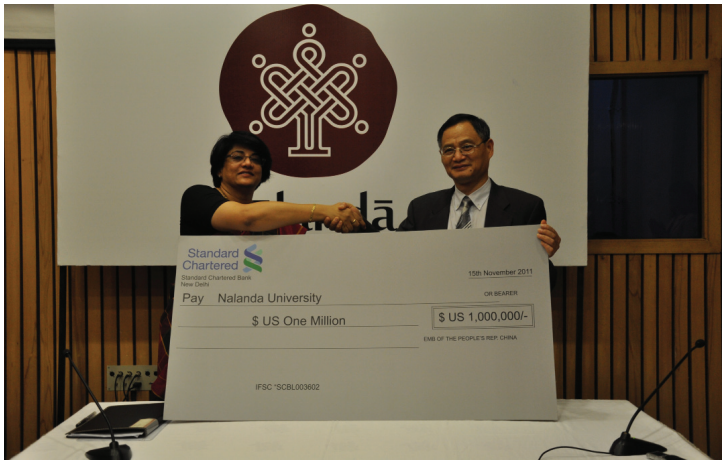

चीन की सरकार की तरफ से प्राप्त भेंट।

NU hindi annual report.indd x35 29-Apr-14 2:52:39 PM

थाईलैंड सरकार ने नालंदा विश्वविद्यालय के लिए एक निर्धारित बैंक खाता भी खोला है, जिसमें कोई भी निजी व्यक्ति अनुदान दे सकता है।

थाईलैंड की सरकार की इच्छा है कि उसके अनुदान, 1,00,000 अमेरिकी डॉलर को विश्वविद्यालय के 'संस्थान कोष' में जोड़ दिया जाए और प्रबंधक मंडल जैसा सही समझे वैसे उसका उपयोग किया जा सकता है। उसने यह भी संकेत दिया है कि थाईलैंड की निजी कंपनियों द्वारा दिए गए अनुदान से एक ''थाईलैंड फण्ड फॉर नालंदा यूनिवर्सिटी'' की स्थापना की जाए जिसको उन छात्रों और शिक्षाविदों की छात्रवृत्ति और/या अध्येतावृत्ति के लिए निर्धारित किया जा सके जो बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म का अध्ययन कर रहे हों।

थाईलैंड की सरकार की तरफ से प्राप्त भेंट।

NU hindi annual report.indd x36 29-Apr-14 2:52:39 PM

राजदूत मदनजीत सिंह, यूनेस्को के सदभावना राजदूत और दक्षिणी एशिया संस्थान (एसएएफ) के संस्थापक ने दस लाख अमेरिकी डॉलर का अनुदान देने की पेशकश की। विश्वविद्यालय इस संस्थान तथा श्री मदनजीत सिंह के साथ इस विषयवस्तु को भविष्य में भी जारी रखने हेतु संपर्क में हैं।

डॉ गोपा सभरवाल और डॉ. अंजना शर्मा 2 नवंबर, 2011 को भारत के विदेश मंत्रालय के निमंत्रण पर भारत आये चीन के गंसु प्रांत के कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव श्री लू हाओ से मिले। श्री लू हाओ ने अपने प्रांत की समृद्ध बौद्ध विरासत, विशेषकर डनहुआंग गुफाओं के बारे में बात की। वह अपने साथ विश्वविद्यालय के लिए विशेष भेंट के रूप में छह दुर्लभ और मूल्यवान धर्मग्रंथों का अंक लेकर आये। ये अंक दुर्लभ और मूल्यवान हैं और विश्वविद्यालय को प्राप्त ऐसी पहली भेंट हैं जो अंततः पुस्तकालय के चीनी शैली अनुभाग में रखी जायेगी जो चीनी सरकार द्वारा प्राप्त वित्तीय योगदान से बनाया जाना है।

विश्वविद्यालय ने ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, कैनबरा के एक विद्वान, स्वर्गीय प्रोफेसर केन गार्डिनर का निजी संग्रह भेंटस्वरूप प्राप्त किया। उनकी विधवा सुश्री मेरिल गार्डिनर ने उनकी पुस्तकों का संग्रह विश्वविद्यालय को भेंट किया। यह संग्रह प्रारंभिक और मध्ययुगीन चीनी और कोरियाई इतिहास से संबद्ध है। यह भेंट प्रोफेसर पंकज मोहन के प्रयासों से संभव हुई जो प्रोफेसर केन गार्डिनर के पूर्व छात्र रहे हैं। विश्वविद्यालय किताबों को ऑस्ट्रेलिया से भारत स्थानांतरित करने की प्रक्रिया पर काम कर रहा है।

श्री लू हाओ से पवित्र लेखों का एक सेट प्राप्त करते हुए।

NU hindi annual report.indd x37 29-Apr-14 2:52:40 PM

19 मार्च, 2012 को विदेश मंत्रालय द्वारा उपकुलपति को औपचारिक रूप से यह सूचना दी गयी कि उन्हें भारत के राष्ट्रपति, जोकि विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष हैं, द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय के उपकुलपति के रूप में नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति 8 अक्टूबर, 2010 से प्रभावी है, जिस दिन से उन्होंने उपकुलपति का कार्यालय (निर्दिष्ट) ग्रहण किया है।

विश्वविद्यालय के अधिनियमो को कुलाध्यक्ष द्वारा 7 मार्च को स्वीकृति दी गयी और 31मार्च, 2012 को भारत सरकार के गजट में सूचित कर दिया गया।

वर्ष 2010–11 के लिए विश्वविद्यालय के खातों का प्रमाणन ऑडिट सीएजी के एक दल द्वारा जनवरी 2012 में किया गया। इसके बाद जनवरी 2012 तक के विश्वविद्यालय के ताजा लेन–देन का ऑडिट किया गया।

डॉ. गोपा सभरवाल

चित्र में बायें से दायें की ओर :– श्री सुधीर कुमार; डॉ. अंजना शर्मा; डॉ. गोपा सभरवाल तथा डॉ. पद्माकर मिश्र।

NU hindi annual report.indd x38 29-Apr-14 2:52:40 PM

शैक्षिक योजना

एक स्नातकोत्तर, अनुसंधान प्रधान लिबरल आर्ट्स विश्वविद्यालय के रूप में नालंदा को अनुसंधान प्रतिमान को प्रोत्साहित कर बढ़ावा देने हेतु स्थापित किया जाना है जहां प्रयोगात्मक शिक्षण और अभिनव विचार, दोनों को प्रोत्साहित किया जाएगा। शैक्षिक दृष्टिकोण – जिसमे सभी सात विद्यालय शामिल हैं – उपनिवेशवाद के ऐतिहासिक सम्बन्ध बनाने की इच्छा से तैयार किया गया है और यह एक शिक्षण – अधिगम – अनुसंधान प्रतिमान बनाकर मानवीय शिक्षा के मॉडल की सुविधा प्रदान करता है। इसलिए, यह विश्वविद्यालय पारस्परिक विश्वास और शांति और मानव सद्भाव के खोए हुए सिद्धांतो को स्थापित करने के लिए शिक्षा के एक नए मॉडल के सपने को वास्तविकता का रूप देना चाहता है।

नालंदा विश्वविद्यालय का अधिनियम इस दृष्टिकोण को मजबूत करता है – ''क्षेत्रीय शांति और दृष्टि को बढ़ावा देने के योगदान मे पूर्वी एशिया के भविष्य के नेताओं को एक साथ लाकर, अपने अतीत के इतिहास से सम्बंधित अपनी समझ से एक दूसरे के परिपेक्ष्य को समझकर उसे वैश्विक रूप से फैलाएं''। इसके अलावा विश्वविद्यालय, ''छात्रों और विद्वानों मे सामंजस्य और सहमति की भावना को विकसित और प्रोत्साहित करेगा और उन्हें लोकतांत्रिक समाज का अनुकरणीय नागरिक बनने के लिए प्रशिक्षित करेगा।''

नालंदा एक नए विश्वविद्यालय का प्रारूप बनाना चाहता है जो सर्वश्रेष्ठ, सहमतिजन्य, भेदभाव रहित और मूलतः रचनात्मक हो। यह विश्वविद्यालय का संशोधनवादी और क्रान्तिकारी पहलु है जिसके तहत विद्यालय अपनी शैक्षिक यात्रा के लिए प्रथम दो स्कूलों का चयन करेगाः ऐतिहासिक अध्ययन और इकोलॉजी और पर्यावरण अध्ययन। ग्रामीण, कृषि प्रधान और प्राचीन मगध के ऐतिहासिक घने क्षेत्र में विश्वविद्यालय की स्थिति को देखते हुए दोनों चुने विद्यालय स्थानीय, क्षेत्रीय,

NU hindi annual report.indd x39 29-Apr-14 2:52:40 PM

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय लोगों को जोड़ेंगे। प्राचीन नालंदा खंडहरों से सिर्फ दस किलोमीटर दूर, नए विश्वविद्यालय का स्थान ऐसी जगह स्थित है जो ऐतिहासिक और पुरातात्विक रूप से समृद्ध है और छात्रों व शिक्षकों को इतिहास तथा पर्यावरण से जुड़ने के सजीव अनुभव का अवसर प्रदान करेगा।

प्राचीन नालंदा में विद्वत्ता कई विषयों में थी और बौद्धिक उत्कृष्टता की निशानी थी। विभिन्न उपदेशों के साथ संलग्न इसने खोज, निरीक्षण, प्रयोग और क्रियान्वन को स्वीकृति प्रदान की। वास्तव में, नालंदा की शैक्षणिक प्रथा ने स्थानीयता और वैश्विकता को शामिल कर लिया था। अपनी पारिवाशिक मजबूत जड़ो और वास्तविक/महत्वपूर्ण निरीक्षण की विचारधारा से ओतप्रोत यह सदियों तक समृद्ध रही। जीवन के प्रति पूर्णतावादी पद्धति और ज्ञान के कारण नालंदा ने पूरे एशिया से छात्रों और शिक्षकों को आकर्षित किया। नालंदा के विनाश ने ज्ञान के इस आदर्श को समय के मलबे में दबा दिया। अब इसके पुनरुत्थान से नए विश्वविद्यालय का प्रयास इस आदर्श को दोबारा पाना और इसे फिर से वर्तमान इतिहास और इकीसवीं सदी की चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में जीवंत करना है।

इस जनादेश को देखते हुए, नालंदा विश्वविद्यालय की शैक्षिक योजना बनाने का पहला कदम वर्तमान सन्दर्भ मे नालंदा के अनुभवजन्य ज्ञान के तरीके को फिर से पाना है। पहले दो विद्यालय, ऐतिहासिक अध्ययन तथा पारिस्थितिकी व पर्यावरण, को चुनने के पीछे दो कारण हैं अतीत को खोजना और वर्तमान नालंदा के परिदृश्य को विकसित करना है। ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय स्थानीय, क्षेत्रीय और एशियाई इतिहास में निहित होगा। नालंदा के पास की जगह की पुरातात्विक खुदाई और पर्यावरणीय निरीक्षण तथा विकास भविष्य के विस्तार का मार्ग बनाएगा। पहले दोनों विद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय की शैक्षिक मेरुदंड होंगे।

इस दर्शन के अनुरूप, प्रबंधन मंडल ने अक्टूबर 2011 में बीजिंग में अपनी बैठक में पहले दो विद्यालयों के प्रारूप नोट को स्वीकृत किया। विद्यालयों का उद्देश्य अंतर्विषयक, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, एशियाई और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में उच्च विशेषज्ञता विकसित करना है। इस शोधपरक विश्वविद्यालय को गति देने के लिये, कुछ महत्वपूर्ण सहयोग किये गए हैं और कुछ विचाराधीन हैं। इस प्रक्रिया को मजबूती प्रदान करने के लिए उपकुलपति और अकादमिक अफेयर्स एंड यूनिवर्सिटी डेवलपमेंट के विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी) ने कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाएं हैं।

NU hindi annual report.indd x40 29-Apr-14 2:52:41 PM

इसके अलावा, पुस्तकों के निजी संग्रह के रूप में अमूल्य संसाधनों का स्वैच्छिक दान भी शुरू किया जा चुका है। प्रोफेसर केनेथ गार्डिनर का चीनी और कोरियाई पुस्तकालय भी नालंदा स्थानांतरित होने की प्रक्रिया में है। पश्चिमी शिक्षा क्षेत्र में स्व. प्रोफेसर गार्डिनर एशियाई अध्ययन में अग्रणी थे। पहले वह ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, कैनबेरा के एशियाई इतिहास विभाग के वरिष्ठ व्याख्याता थे। उनके निजी पुस्तकालय को नालंदा विश्वविद्यालय को देने की उनकी पत्नी की इच्छा नालंदा विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय चरित्र को रेखांकित करता है।

इसके अलावा नालंदा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए, विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर व्याख्यान दिए गए हैं। 2011 के अंतिम चरण और 2012 के आरम्भ में उपकुलपति और विशेष कार्याधिकारी (यूडी और एए) ने नालंदा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक कार्यक्रम को साझा करने के लिए निम्नलिखित विश्वविद्यालयों का दौरा किया:

टेरी विश्वविद्यालय, भारत

येल विश्वविद्यालय, स्कूल ऑफ फॉरेस्ट्री एंड एनवायर्नमेंटल स्टडीज, यूएसए

चाथम विश्वविद्यालय, यूएसए

पेन्सिल्वेनिया स्टेट विश्वविद्यालय, यूएसए

ड्यूक विश्वविद्यालय, यूएसए

क्योटो विश्वविद्यालय, जापान

रितसुमेइकन विश्वविद्यालय, जापान

नालंदा श्रीविजया सेंटर एंड आईएसईएएस, सिंगापुर

भारत और विदेश में एक दूसरे के अनुभवों से सीखने हेतु शैक्षिक और प्रशासनिक व्यक्तियों के साथ व्यापक विचार–विमर्श का आयोजन किया गया। नालंदा विश्वविद्यालय व सम्बंधित संस्थानों के बीच भविष्य में सहयोग तथा विचारों और योजनाओं का आदान–प्रदान भी हुआ। ऊपर उल्लिखित संस्थानों का साझा' स्वप्न और नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा दोनों विद्यालयों को बनाने की कौतुहलपूर्ण भावना ने इन संस्थानों की तरफ से नालंदा विश्वविद्यालय से सहयोग विकसित करने की इच्छा बढाई।

नालंदा विश्वविद्यालय के लक्ष्य और उद्देश्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए, डॉ गोपा सभरवाल और डॉ अंजना शर्मा ने निम्नलिखित सम्मेलनों और कार्यक्रमों में नालंदा विश्वविद्यालय के स्वप्न और गहराई के विषय में जानकारी दी।

NU hindi annual report.indd x41 29-Apr-14 2:52:41 PM

जनवरी 2011: नालंदा श्रीविजया केंद्र के आमंत्रण पर डॉ. गोपा सभरवाल ने नालंदा विश्वविद्यालय पर सार्वजनिक व्याख्यान देने के लिए सिंगापुर की यात्रा की।

6 फरवरी 2011: डॉ. सभरवाल ने अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन, जो जापानी संस्थान एवं ओरिएंटल फिलोसोफी द्वारा आयोजित की गई, में व्याख्यान दिया। उनका व्याख्यान ''नालंदा विश्वविद्यालय की पुनरुत्थान योजना शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

3–4 मार्च, 2011: डॉ. सभरवाल ने नालंदा विश्वविद्यालय के विषय में एक लेख, ''नालंदा – एशियाई पुनर्जागरण का प्रतीक'' को इंडियन कौंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली द्वारा आयोजित दिल्ली वार्ता 3 बियॉन्ड द फर्स्ट ट्वेंटी इयर्स ऑफ़ इंडो–एशियन इंगेजमेंट में प्रस्तुत किया।

31 मार्च – 4 अप्रैल, 2011: डॉ. गोपा सभरवाल और डॉ. अंजना शर्मा ने एसोसिएशन ऑफ एशियन स्कॉलर्स में भाग लेने के लिए होनोलूलू का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने दुनिया भर से एशियाई विद्वानों के साथ बातचीत की और एएएस के अध्यक्ष, प्रोफेसर एस शिवरामकृष्णन से भी भेंट की। उन्होंने मार्च 2012 में टोरंटो में होने वाले आगामी एएएस के सम्मेलन में, नालंदा विश्वविद्यालय की नींव के बारे में होने वाली एक गोलमेज वार्ता के भी संकेत दिए।

2–4 सितम्बर, 2011: डॉ. अंजना शर्मा ने इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस, हैदराबाद की यात्रा की और कुलपतियों की वार्षिक बैठक में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

4–7 सितम्बर, 2011: डॉ. सभरवाल ने भारत जापान ग्लोबल पार्टनरशिप समिट में भाग लेने के लिए टोक्यो की यात्रा की और दो सत्रों में भाग लिया – जिनमें से एक सत्र विशेष रूप से नालंदा विश्वविद्यालय पर था। परिषद् के सदस्य, श्री एन.के.सिंह और श्री जॉर्ज यीओ भी इस शिखर सम्मेलन में उपस्थित थे। श्री यीओ ने प्रथम सत्र में, 'इंडिया एज एन्यू एजुकेशन हब' में और श्री सिंह ने दोनों सत्रों में व्याख्यान दिया।

4 फरवरी, 2012: टेरी द्वारा दिल्ली में आयोजित डेल्ही सस्टेनेबल समिट में एक सत्र में उपकुलपति ने ''ओवरकमिंग द डिवाइडः ग्लोबल नार्थ वर्सेज ग्लोबल साउथ'' पर व्याख्यान दिया।

19 फरवरी, 2012: 10 वीं बीसीआईएम फोरम, (जिसे पहले कुनमिंग पहल के रूप में जाना जाता था) कोलकाता में, उपकुलपति और विशेष कार्याधिकारी ने नालंदा विश्वविद्यालय पर एक प्रस्तुति दी।

NU hindi annual report.indd x42 29-Apr-14 2:52:41 PM

24 फरवरी 2012: उपकुलपति ने नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस कम्युनिकेशन और इनफार्मेशन रिसोर्सेज और कौंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (एनआईएससीएआईआर – सीएसआईआर) में एक डायमंड जुबली व्याख्यान दिया।

13–17 मार्च, 2012: नालंदा विश्वविद्यालय ने टोरंटो में ''द यूनिवर्सिटी इन द 21स्ट सेंचुरी: विज़न एंड चौलेंजेस'' पर एसोसिएशन ऑफ एशियन स्टडीज में एक राउंड टेबल सम्मलेन आयोजित किया जिसके वक्ताओं में प्रोफेसर ते खेंग, डॉ तानसेन सेन, डॉ. गोपा सभरवाल और डॉ. अंजना शर्मा थे।

22 मार्च, 2012: इंस्टिट्यूट ऑफ ओरिएंटल फिलोसोफी के संरक्षण में टोक्यो में उपकुलपति द्वारा 'नालंदा विश्वविद्यालय – ओल्ड एंड न्यू' पर सार्वजनिक व्याख्यान दिया गया।

23 मार्च 2012: उपकुलपति और विशेष कार्याधिकारी ने क्योटो विश्वविद्यालय में नालंदा विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में एक प्रस्तुति दी। इसके पश्चात् महत्त्व और सहयोग के संभावित क्षेत्रों के बारे में बैठक हुई।

25 मार्च, 2012: उपकुलपति ने इंस्टिट्यूट ऑफ ओरिएंटल फिलोसोफी, टोक्यो, जापान के वार्षिक सम्मेलन पर एक लेख, 'नालंदा विश्वविद्यालय फ्रॉम द अकेडमिक पर्सपेक्टिव' प्रस्तुत किया। उस लेख को बाद में ''रिवाइवल प्लान ऑफ नालंदा यूनिवर्सिटी'' के नाम से प्रकाशित किया गया।

टोरंटो में आयोजित गोलमेज सम्मेलन।

टोक्यो में उपकुलपति व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

NU hindi annual report.indd x43 29-Apr-14 2:52:41 PM

कक्षाओं की औपचारिक शुरुआत से पहले और नालंदा की शोध अनुकूलता को दिखाने के लिये विश्वविद्यालय ने निम्नलिखित कार्यक्रमों का समर्थन किया:

भारत और चीन के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक बातचीत पर कार्यशाला, पीकिंग विश्वविद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय के द्वारा पीकिंग विश्वविद्यालय में नालंदा–श्रीविजया केंद्र, अक्टूबर, 2011 में सहप्रायोजित की गई। यह नालंदा विश्वविद्यालय का प्रथम शैक्षिक उपक्रम था और इसने नए तथा पुराने स्रोतों, संवाद के क्षेत्रों और नेटवर्क फैलाव का अन्वेशण किया। इसने कला, विज्ञान और साहित्य में बौद्ध प्रथाओं को प्रतिबिंबित किया। अंत में, यह चीन और भारत के बीच मध्य समकालीन चर्चाओं के बाद समाप्त हो गई। नालंदा विश्वविद्यालय ने इस सम्मेलन के लिए दो विद्वानों को प्रायोजित किया।

'एशिया में बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार पर सम्मेलन' जोकि आईसीसीआर, नालंदा – श्रीविजया सेंटर, इंटरनेशनल स्कूल ऑफ ईस्ट एशिया स्टडीज (आईएसईएएस), नालंदा यूनिवर्सिटी और मैक्स प्लांक इंस्टिट्यूट द्वारा दिसम्बर 2011 को आईएसईएएस, सिंगापुर में सहप्रायोजित किया गया। पुनरुद्धार के विचार पर इस सम्मेलन में बौद्ध धर्म की भारत और श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, चीन तथ जापान के पार समकालीन सफर पर विचार किया गया। सम्मलेन में इतिहासकारों, पुरातत्वविदों, मानवविज्ञानियों और धार्मिक विद्वानों द्वारा प्राप्त जानकारियो से विचारगोष्ठी अपनी बनावट में बहुविषयक हो गई।

दीर्घकालिक पर्यावरण अनुकूल स्थायी परिसर निर्माण के विचार से उत्साहित, सिंगापुर नेशनल यूनिवर्सिटी में, नालंदा स्टूडियो की संकल्पना 'नालंदा यूनिवर्सिटी मूल योजना' बनी। स्टूडियो प्राचीन एशियाई लोगों की मानवीय पूंजी को अभिग्राहित कर इसे भविष्य के वैश्विक दर्शन के साथ संतुलित करने का प्रयास करेगा। प्रोफेसर तायखेंग के नेतृत्व में दूसरे व चौथे वर्ष के वास्तुकला के चौदह विनिमित चीनी छात्र जल्द ही इस शैक्षिक अभ्यास में कार्य करेंगे। दल ने 2012 फरवरी के पहले सप्ताह में राजगीर का दौरा किया और उपकुलपति व विशेष कार्याधिकारी (यूडी एवं एडी) ने उन्हें नालंदा के छात्रों का दृष्टिकोण 'मूल योजना' के बारे में बताया।

डॉ अंजना शर्मा

NU hindi annual report.indd x44 29-Apr-14 2:52:41 PM

नालंदा विश्वविद्यालय के वित्तीय प्रबंधन पर रिपोर्ट

किसी विश्वविद्यालय के वित्तीय प्रबंधन में सभी वित्तीय गतिविधियों का नियोजन, आयोजन, निर्देश, और नियंत्रण उसके वित्तीय साधनों के सामान्य प्रबंधन के सिद्धांतों को लागू करने से होता है। यह प्राप्त निधि का अधिकतम उपयोग और विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण और लक्ष्यों की प्राप्ति को सुनिश्चित करता है। इसके अलावा, इस अधिनियम के तहत सभी वैधानिक दायित्वों, विधियों और विनियम की भावना का समयबद्ध पालन किया गया है।

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना 25 नवंबर, 2010 को हुई थी। विश्वविद्यालय के नाममात्र स्टाफ ने वित्तीय वर्ष 2010–11 के शेष भाग, वित्तीय वर्ष 2011–12 और वित्तीय वर्ष 2012–2013, के लिए कड़ाई से अपना बजट विदेश मंत्रालय, जोकि इसका प्रशासनिक मंत्रालय है, द्वारा दिए गए समयानुसार बना दिया।

विश्वविद्यालय का भारतीय स्टेट बैंक, आर.के. पुरम शाखा में खाता है। पूरे समय पैसे की सही उपलब्धता बनाये रखने के लिये पैसे के सही उपयोग और इस्तेमाल पर ध्यान दिया गया है। विश्वविद्यालय को दो ईएएस के सदस्य देशों चीन और थाईलैंड से कुछ पैसा प्राप्त हुआ। यह पैसा निवेश में अधिकतम मुनाफा प्राप्त करने के लिए फिक्स्ड डिपाजिट में रखा गया है।

NU hindi annual report.indd x45 29-Apr-14 2:52:41 PM

विश्वविद्यालय ने संचालक बोर्ड द्वारा स्वीकृत वित्तीय वर्ष 2010–11 के लिए वार्षिक लेखा बनाया है। नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम की धारा 32 के तहत, वार्षिक लेखा भारत के महानियंत्रक लेखा परीक्षक कार्यालय द्वारा लेखा परीक्षित किया जाएगा। इसके अनुसार, विश्वविद्यालय ने अपने खाते का महानियंत्रक और लेखा कार्यालय से ऑडिट कराया। ऑडिट पार्टी द्वारा पूछे गए कुछ प्रश्नों और टिप्पणियों का जवाब भेज दिया गया है। वर्ष 2010–11 के प्रबंधन मंडल द्वारा ऑडिट और अनुमोदित किये गए वार्षिक खाते को कुलाध्यक्ष के पास प्रस्तुति और संसद में रखने के लिए मुद्रित कर दिया गया है।

अपनी वित्तीय गतिविधियों के उचित प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय ने संचालक मंडल द्वारा अनुमोदित वित्तीय नियम तैयार किये हैं। विदेश मंत्रालय द्वारा दिए गए सुझाव और सुधार अभी चर्चा में है।

विश्वविद्यालय के लेखा को एक हद तक टैली सॉफ्टवेयर में कंप्यूटरीकृत कर दिया गया है और सभी वित्तीय लेन देन को कंप्यूटरीकृत करने की प्रक्रिया चल रही है जिससे कि विश्वविद्यालय के वित्तीय प्रबधन हेतु फाइनेंशियल इन्फोर्मेशन मैनेजमेंट सिस्टम (एफआईएमएस) लागू किया जा सके।

पद्माकर मिश्रा

NU hindi annual report.indd x46 29-Apr-14 2:52:42 PM

परिसर

विश्वविद्यालय का प्रस्तावित स्थल बिहार के नालंदा जिले में स्थित है और राज्य राजमार्ग 71 के सामने है। यह शहर के वर्तमान शहरी किनारे से 3.5 किलोमीटर की दूरी पर राजगीर शहर के दक्षिण–पश्चिमी सीमा पर स्थित है। राजगीर नालंदा जिले का एक प्रशासनिक उपखंड भी है। यह प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक स्थल से लगभग 12 किलोमीटर दूर और बिहार राज्य की राजधानी पटना से सड़क मार्ग से लगभग 100 किलोमीटर दूर है।

इस स्थान का कुल क्षेत्रफल लगभग 450 एकड़ है जो राज्यमार्ग के पूर्व–पश्चिम दिशा में स्थित है। दक्षिण में रेलवे पटरियों के पीछे प्राचीन राजगीर की पहाड़ियां हैं। स्थल की भूमि सपाट है जहां पर कुछ मौसमी जल निकाय भी हैं। प्रस्तावित स्थल जती भगवानपुर, मुदफ्फरपुर और कुबरी गांवों से घिरा हुआ है। जनगणना के संदर्भ में राजगीर की एक अधिसूचित क्षेत्र (एनए) के रूप में पहचान है। यह 2011 की जनगणना के आधार पर 33,738 लोगों की आबादी के साथ वर्ग 3 शहर में आता है। नालंदा जिला बिहार राज्य की कुल जनसंख्या का 2.77 प्रतिशत भाग है।

बौद्ध और जैन तीर्थ परिपथों में राजगीर बहुत महत्वपूर्ण है। गिद्धकूट शिखर, जिसे ईगल पीक भी कहा जाता है – जहां बुद्ध ने अपना प्रसिद्ध 'कमल सूत्र' दिया था, एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल है। अन्य पर्यटक आकर्षणों में से कुछ है गरम पानी का झरना जिसे ब्रह्म कुंड और मकदूम कुंड भी कहा जाता हैं; और जिला प्रशासन द्वारा आयोजित पारंपरिक मलमास मेला, और वार्षिक राजगीर सांस्कृतिक महोत्सव।

प्रस्तावित स्थल की झलक।

NU hindi annual report.indd x47 29-Apr-14 2:52:42 PM

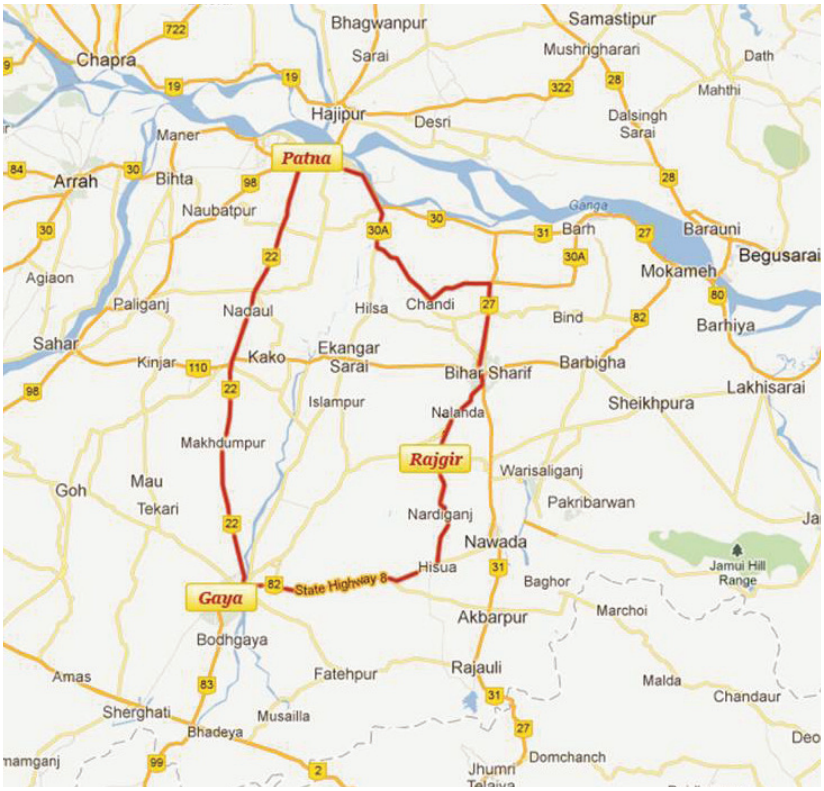

राजगीर के परिपेक्ष्य में पटना व गया की स्थिति को दर्शाता मानचित्र।

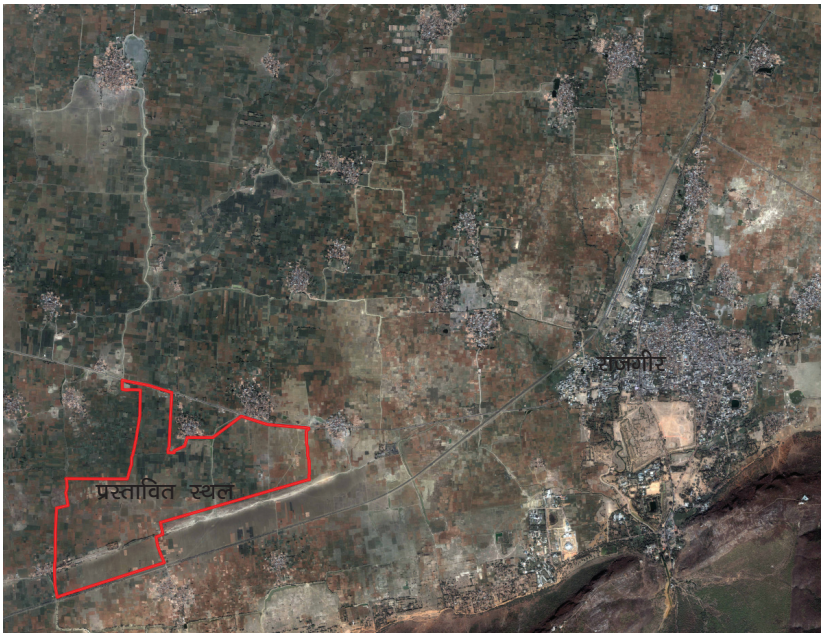

उपग्रह द्वारा प्रस्तावित स्थल व राजगीर शहर की ली गयीं तसवीरें।

NU hindi annual report.indd x48 29-Apr-14 2:52:42 PM

प्रस्तावित विश्वविद्यालय परिसर, जो नया और तकनीक से आधुनिक होगा, निःसंदेह निरंतरता का मार्ग अपनाएगा और अपने वासियों और आगंतुकों के लिए समान रूप से आरामदायक और कार्यकुशल होगा। स्थिरता और पर्यावरण संवेदनशीलता को सभी स्तरों पर बल दिया जाएगा। इस परिसर का लक्ष्य शून्य ऊर्जा, शून्य उत्सर्जन, शून्य अपशिष्ट और शून्य पानी को प्राप्त करना है। इस विकल्प को ऐसे भवनों के निर्माण से पूरा किया जा सकता है, जो ऊर्जा उपयोग में मितव्ययी, प्रकाशवान, हवादार और परम्परागत ऊर्जा का कम से कम उपयोग करने वाले हों।

इस प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय आकार और विकास में एक आत्म निहित सतत विश्वविद्यालय परिसर का निर्माण कर नए मानक स्थापित करना चाहता है।

प्रस्तावित स्थल का दृश्य।

NU hindi annual report.indd x49 29-Apr-14 2:52:43 PM

अधिकारियों और कर्मचारियों की निर्देशिका

	दूरभाष	ईमेल
1. डॉ गोपा सभरवाल उपकुलपति	011 24618352	gsabharwal@nalandauniv.com
2. डॉ. अंजना शर्मा विशेष कार्याधिकारी (शैक्षणिक मामले)	011 24622330	asharma@nalandauniv.com
3. डॉ. पद्माकर मिश्रा विशेष कार्याधिकारी (वित्त)	011 24622329	pmishra@nalandauniv.com
4. श्री सुधीर कुमार सलाहकार (प्रशासन)	011 24622328	skumar@nalandauniv.com
5. श्री एस.एल.शर्मा प्रशासनिक अधिकारी	011 65657549	slsharma@nalandauniv.com
6. श्री महेश पटेल उपकुलपति के निजी सहायक	011 24618352	mpatel@nalandauniv.com
7. श्री आर.एस. माथुर अनुभाग अधिकारी	011 65657549	
8. श्री परवेज आलम संयोजक राजगीर कार्यालय	06112 255330	palam@nalandauniv.in
9. श्रीमति कामिनि भाटिया कार्यालय संयोजक दिल्ली कार्यालय	011 24618352	kbhatia@nalandauniv.com
10. श्री विनोद कार्यालय परिचारक	011 24618352	

बोर्ड लाइन (दिल्ली) : 011 24622330

फैक्स (दिल्ली) : 011 24618351

राजगीर कार्यालय (टेलीफैक्स) : 06112 255330

NU hindi annual report.indd x50 29-Apr-14 2:52:44 PM

NU hindi annual report.indd x51 29-Apr-14 2:52:44 PM

नई दिल्ली कार्यालय
द्वितीय तल, काउंसिल फॉर सोशल डेवेलोपमेंट भवन
संघरचना, 53 लोधी स्टेट नई दिल्ली - 110003
दूरभाष संख्याः +91- 24622330 फैक्स संख्याः +91- 1124618351
राजगीर कार्यालय
राजगीर, जिला नालंदा - 803115
बिहार, भारत
वेबसाइट- **www.nalandauniv.edu.in**

NU hindi annual report.indd x52 29-Apr-14 2:52:44 PM